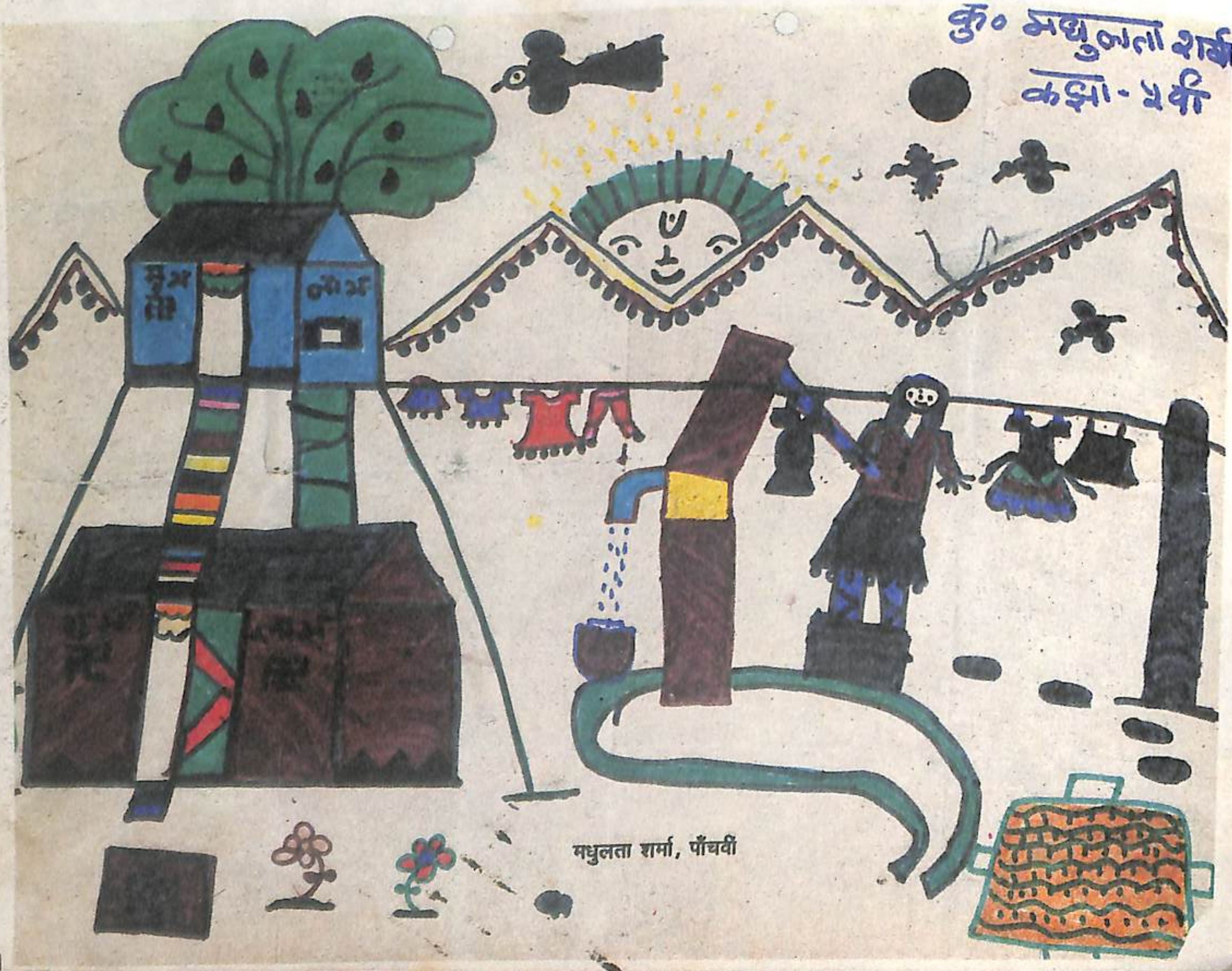
चकमक

अप्रैल, 1996 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 5.00





अश्विन अरोरा, पाँच वर्ष, परासिया, म. प्र.



मधुलता शर्मा, पाँचवीं

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-11 अंक 10 अप्रैल 1996

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)
फोन : 563380



अमजद खान लतीफ, सातवीं, हाटपीपल्या, देवास, म. प्र.

128वें अंक में ....

विशेष

कविताएँ

हर बार की तरह

और यह भी

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

फरवरी, 96 का चकमक मिला। 'बच्चों के अधिकार' विषय को इतने रोचक और बालसुलभ ढंग से प्रस्तुत करने के लिए बधाई। प्रत्येक बिन्दु से सम्बंधित बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति चुनकर देना, आपकी पैनी सम्पादकीय दृष्टि की परिचायक है। आपको बधाई।

❑ डॉ. हरिकृष्ण देवसरे,
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

महोदय हमें आपकी यह पत्रिका बड़ी ही ज्ञानवर्द्धक व अच्छी लगती है। आपने इस छोटी-सी पत्रिका में गागर में सागर भर दिया है। ख़ासकर हमें 'हम हैं पेंग्विन' वाली जानकारी बहुत अच्छी लगी। आप जो अपनी पत्रिका में कविताएँ प्रकाशित करते हैं, वह भी हमें काफ़ी अच्छी लगती हैं।

❑ लीटील बाफना, तिलगारा,
धार, म.प्र.

चकमक हमारे स्कूल में आती है। मैं कक्षा तीसरी में रात्रि स्कूल में पढ़ता हूँ। मेरा नाम कालूराम है। और मेरा दोस्त सदन है। हमने चकमक पढ़ी, बहुत अच्छी लगी।

❑ कालूराम बैरकाल, नांदपुष्कर,
अजमेर, राजस्थान

बाल शिक्षा और जनवाणी की अनुपम पत्रिका चकमक काफ़ी उपयोगी और सार्थक पत्रिका है। आपकी पूरी पत्रिका में विज्ञान विशेष नामक स्तम्भ अत्यंत रुचिकर और सूचनादायक रहता है।

विज्ञान लेख इतने सुन्दर और आकर्षक होते हैं कि मैं अपने महाविद्यालय के उन विद्यार्थियों को यह लेख पढ़ने के लिए अनुशंसित करता हूँ जिनका विज्ञान में अधिकार अपेक्षाकृत कम होता है।

कुछ प्रमुख लेख जो अत्यधिक अच्छे लगे, इस प्रकार हैं, 'क़िलों का रहस्य (सितम्बर, 93), सूर्य की लुका-छिपी (सितम्बर, 95), संचार : धुएँ से टेलीफ़ोन तक (अक्टूबर, 95), एक्स रे के सौ साल (जनवरी, 96)। आपसे अनुरोध है कि विज्ञान के बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित ऐसे लेखों की श्रृंखला सतत् जारी रखें, ताकि बच्चों के साथ बड़ों के लिए भी उपयोगी साबित हो।

❑ रोहित कुमार वर्मा,
पाटन, दुर्ग, म.प्र.

हम आपकी यह चकमक पत्रिका जो बच्चों के कलागुणों को अहम् स्थान देती है, वह हमेशा पढ़ते हैं। और हमारे स्कूल के बच्चे भी पढ़ते हैं। हमारा स्कूल मराठी मीडियम से अभ्यास क्रम चलाता है। इसलिए ख़ासकर पाँचवीं से सातवीं तक के बच्चों को इससे लाभ मिलता है। हमारा स्कूल 'तेजस् मुक्त विद्यालय' एक प्रायोगिक स्कूल है। बच्चों को केन्द्र स्थान मानकर कई योजनाएँ हमने अपनाई हैं।

❑ पद्मा डी. पाटिल, मुख्याध्यापिका
तेज़स् मुक्त विद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

आपकी बाल पत्रिका चकमक बहुत अच्छी लगती है, बच्चों के लिए ज़रूरी भी।

❑ अनूप सेठी, बम्बई, महाराष्ट्र

चकमक का फ़रवरी, 96 अंक और मुखपृष्ठ देखा। देखते ही रह गई। कितनी-कितनी बधाई दूँ, आप लोगों की पारखी, कलात्मक और संवेदनशील दृष्टि को। समझ और शब्द ढूँढ रही हूँ। कभी मैंने एक लघुकथा लिखी थी, जो इस चकमक के मुखपृष्ठ चित्र पर सटीक बैठ रही है। अवलोकनार्थ कथा प्रस्तुत है।

❑ उर्मि कृष्ण, अम्बाला
छावनी, हरियाणा

बोझ



पथरीला, संकरा रास्ता था और खड़ी चढ़ाई। एक साधु उस मार्ग से तीर्थ-यात्रा को जा रहे थे। सामान के नाम पर उनके पास एक कम्बल, चिमटा और कमण्डल ही था, किन्तु चढ़ाई के कारण वह उसी में पसीना-पसीना हो रहे थे।

कुछ आगे चलकर उन्हें एक 11-12 वर्ष की पहाड़ी कन्या दिखी जो पीठ पर एक बच्चे को लिए हुए थी। चार-पाँच वर्ष का वह बालक ख़ूब स्वस्थ व हष्ट-पुष्ट था। वह किशोरी उसे सम्भाले हुए बड़ी फुर्ती से चढ़ाई चढ़ रही थी। साधु ने उससे कहा, "बेटी, इतना बोझ उठाकर तुम कैसे चढ़ लेती हो। ... मैं तो इसी में हाँफ गया हूँ।"

किशोरी ने आँखें तरेरकर साधु की ओर देखा और बोली, 'महाराज, बोझ आपने उठाया हुआ है। मेरा तो यह भाई है।"

❑ उर्मि कृष्ण

शराब ज़हर है!

दिसम्बर, 95 के अंक में प्रकाशित मेरे पत्र के जवाब में साथियो, मुझे आपके 28 पत्र प्राप्त हुए। आप सभी ने बहुत अच्छी-अच्छी बातें लिखी हैं। हमें आप सभी की ज़रूरत है। आपके पत्रों की कुछ ख़ास बातें –

'सरकार को शराब से मुनाफ़ा मिलता है। उसे देश की क्या चिन्ता। वह सिर्फ़ देश बेचना जानती है। उसके पास गाड़ी है, बंगला है। देश के वासी की भूख, प्यास का उसे क्या होश।' ऐसा लिखा है विनोद कुमार, चम्पालाल कुशवाह, रामस्वरूप, कैलाश पडोले, बृजेश कुमार, उमेश कुमार समरथ, अनिल निलंकर ने। विजय सोनिया के साथ उनके नवोदय विद्यालय में अनगिनत लोग शराब के ख़िलाफ़ हैं।

इस शराब के कारण ही बहुत से लोगों की मृत्यु होती है। एक भैया ने मुझे ख़ुद बताया कि उनके बड़े भाई ने शराब के नशे में आत्महत्या कर ली। ये भैया हैं किशोर कुमार मिश्रा।

नरेन्द्र कुंजम ने मुझ से सवाल किया था कि आप ऐसी दवा बताइए जिसके उपयोग से ये लत छूट जाए। उसका उत्तर यह है कि दवा मिलती नहीं, बनाई जाती है। इलाज होता नहीं करना पड़ता है। आपने मुझे शायद डॉक्टर समझा, तभी मुझसे दवा पूछी।

शीतलेश भैया ने मुझे समाज की सेवा करने का आशीर्वाद दिया। मेरी सहेली कुसुमलता ने कहा, 'कि बड़े बहरे हैं, हम बच्चे ही देश का भविष्य हैं। एक बूँद के लिए शराबी माँ को बेचता है।' ख़ैर, सहेली सिर्फ़ नशे में ही नहीं होश में भी लोग औरत को बेचते हैं। पर शराब है बुरी चीज़।

सुनील सिंह चौहान ने शराब को ज़हर से भी ख़तरनाक माना। मुझे यह अच्छा लगा।

भास्कर चौधरी भैया ने मेरा लेख अपने स्कूल के बोर्ड पर लगा दिया। संतोष कुमार को डरने की आदत पसन्द नहीं और यह सबके लिए ज़रूरी है।

शराब शरीर को खोखला करती है। शराबबन्दी के लिए सबको इंतज़ार है। शराब हमारे राष्ट्र को कमज़ोर करती है, इस बात को सभी मानते हैं। लेकिन इसे ख़ास तौर पर लिखने वाले, ब्रह्मानंद यादव, दिलीप राष्ट्रवादी निशान्त, छवि धनेलिया, मोहम्मद रईस मन्सूरी, विष्णु कुमार यादव, धनंजय कुमार सिंह है।

निर्मल कुमार टाँडिया ने लिखा है, 'कि सरकार तो बहरी, अन्धी हो गई है। न तो वह सुन सकती है न देख सकती है। उसे हमारी क्या चिन्ता। पर हमें सरकार की तरह नहीं बैठना है। जिस काम को वो नहीं कर सकती, वो हमें करना है।'

जयन्ती ने लिखा है कि, 'वे जहाँ रहते हैं, वहाँ हर घर में शराब बनती है। उन्होंने कई बार फेंकने की कोशिश की पर उन लोगों ने डाँट दिया।' जयन्ती दीदी अगर आप फेंक भी देतीं तो क्या वहाँ पीना बन्द होता? वहाँ तो फिर शुरू हो जाता। इसे हमें सरकार पर दबाव डालकर बन्द करवाना होगा।

अभी भोपाल में कई महिलाएँ शराब की दुकान पर धरना दे रही थीं। मैंने उन्हें पत्र डाला कि धरना देने से क्या होगा? यहाँ बन्द तो वहाँ दूसरी दुकान खुलेंगी। हमें तो सीधे सरकार से लड़ाई करनी होगी। आप भी सोचिए, मैं भी सोचती हूँ। सुना है भोपाल में पढ़े-लिखे लोग हैं, पर नहीं भोपाल भोंचू है। भोपाल से मेरे पास एक भी पत्र नहीं आया।

❑ टीना मिश्रा, बारह वर्ष, भोपाल, म.प्र.



मेरा पन्ना

मेरी गुमशुदगी

मेरे पापा जी कहीं से आए थे। वो गजक का डिब्बा लेकर आए थे। मेरी मम्मी ने सबको बराबर - बराबर गजक बाँट दी फिर डिब्बा उठाकर अलमारी में रख दिया। मेरा मन नहीं माना, मैंने उसमें से गजक उठाकर खा ली। जब मम्मी को पता चला तो उन्होंने मेरे एक चाँटा लगा दिया। मैं गुस्सा होकर बैठक में सो गया। मेरी मम्मी को पता चला कि मैं बहुत देर से ग़ायब हूँ तो उन्होंने मुझे तलाश करवाया। जब मैं नहीं मिला तो वो दुखी होकर बैठ गईं। जब मेरी नींद खुली तो मैं आँख मीड़ता हुआ बाहर आया तो मुझे देखकर सब लोग खुश हो गए।

● चेतन सिंह सिकरवार, पाँचवीं, पंचमपुरा, मुरैना, म.प्र.

श्यामा



● सुनील कुमार राठौड़, महादेवखेड़ी, सिरोंज, म.प्र.

दो साल पहले की बात है। मेरे घर के बगल में एक यादव जी रहते थे। वे किसी ऑफ़िस में बड़े बाबू थे। उनके यहाँ बहुत-सी गाएँ थीं। वे मुझे अच्छी लगती थीं। एक दिन मैंने अपने दादा जी से एक गाय ख़रीदने की विनती की। कुछ दिन बाद दादा जी पशु मेले से मेरे लिए एक काली रंग की गाय ला दिए। मैं बहुत खुश हुआ। मैंने उसका नाम श्यामा रखा। श्यामा के लिए हम सभी ने मिलकर आँगन में एक छोटा-सा घर बनाया। उसमें लाइट भी लगा दी। श्यामा ख़ूब दूध देने लगी है। हम सभी उसे पीते हैं। मम्मी जी कभी-कभी दही भी बना लेती हैं। उसके गोबर से हम कण्डे बनाते हैं जिन्हें ठण्ड में अंगीठी में जलाने के काम में लाते हैं। अब हम लोग श्यामा की बहुत देखभाल करते हैं। वह भी हम सभी से हिल-मिल गई है। अब किसी के पास फालतू समय नहीं है। सभी श्यामा के गर्म दूध का मज़ा लेते हैं। मुझे श्यामा से बहुत स्नेह है।

● आलोक वर्मा, छठवीं, बैकुण्ठपुर, सरगुजा, म.प्र.

चूहा

एक था चूहा, एक थी बिल्ली। चूहा हर समय बिल्ली का दूध ढुला देता। बिल्ली को एक उपाय सूझा। केले का छिलका बीच में फेंका।
चूहा फिसल गया। दो महीने तक अस्पताल में रहा। दवाई न खाए तो डॉक्टर डराए।

● निधी मांगोदिया, धार, म.प्र.

अलमोड़ा में बर्फ़ गिरी

तारीख 9.1.95 को बस बर्फ़ ही गिरती रही, गिरती रही। उसने रुकने का नाम न लिया। मम्मी ने तो मनु को बीमार की तरह बना दिया। कहने लगीं, 'सोजा, तेरी तबियत ख़राब है। पेट में दर्द हो रहा है सोजा सोजा, मेरी बेटी मनु तो मेरा कहना मानती है, देखना बाहर नहीं जाएगी।'

मनु ने कुछ देर के लिए मम्मी पर इम्प्रेशन मारा (प्रभाव जमाया) फिर उससे रुका न गया। वो मम्मी के मना करने पर भी बाहर आ गई। फिर क्या था मम्मी का गुस्सा सातवें आसमान में चढ़ गया। बाद में हमने मम्मी को मना लिया। हमारे यहाँ दूध की भी कमी हो गई। पापा चुपके से दूध लेने चले गए। मम्मी को भी नहीं पता चला। पापा ने घर आकर भी मम्मी को नहीं बताया। हम मम्मी को मना-मनुके घर से निकल पड़े। किसी ने हम पर गोले बरसाए तो हम ने भी उन पर गोले बरसाए। हम आगे गए तो हमने लोगों को फ़ोटो खींचते देखा। हमारे पैर कड़कड़े हो गए थे। हमें लगा कि हमारे पास तीन चीज़ों की कमी है। वो थे प्लास्टिक के शूज (जूते), कैमरा, दस्ताने। हमारे हाथ भी कड़कड़े हो गए। हमने घर आकर हिम मानव बनाया, वो लड्डू जैसा बन गया। कमरे के अन्दर गए तो मम्मी का गुस्सा सातवें+सातवें, चौदहवें आसमान पर चढ़ा था। फिर भी हमने मुश्किल से मम्मी को मनाया।

आज हम फिर घूमने गए मम्मी को भी ले गए। नीचे के घरों में रहने वाली औरतों ने पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो तो पापा ने कहा नामकरण में। पापा शादी तो कह नहीं सकते थे। इसलिए नामकरण कहा। हम वहाँ से घूमते हुए घर वापस आ गए। फिर दोस्तों के साथ गोलाबारी की।

● अनुरूचि पाण्डे, सातवीं, अलमोड़ा, उ.प्र.

मेरा पैर टूटा



● वीरेन्द्र कँवर, सातवीं, डोण्डी, दुर्ग, म.प्र.

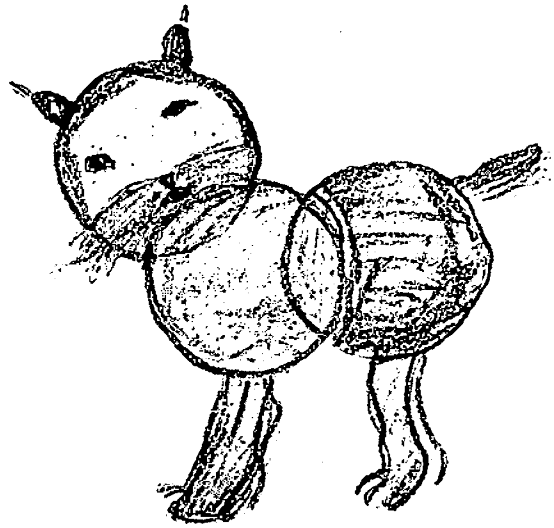
जब मैं अपनी साइकिल सीढ़ी से उतार रही थी तब आखिरी सीढ़ी पर जैसे ही पैर रखा मेरा पैर मुड़ गया और उसमें मोच आ गई। दूसरे दिन मुझे अम्मा बारडोली ले गई और एक्स-रे करवाया। मेरी हड्डी नहीं टूटी थी पर लिगामेन्ट (हड्डी को जोड़ने वाले स्नायु) टूट गए थे। मेरे पैर में प्लास्टर लगाया गया। अब मैं मेरी बहन जो बैसाखी छोड़ गई थी, उस पर चल रही हूँ। मेरेप्लास्टर पर सुमेश मामा ने चित्र बनाया है। सबने कुछ न कुछ लिखा है। मुझे प्लास्टर लगाकर बहुत मज़ा आ रहा है। पर मैं दुखी हूँ क्योंकि मैं स्कूल नहीं जा पा रही हूँ।

● चारुस्मिता गाडेकर, आठवीं, वेडछी, सूरत, गुजरात

बिल्ली रानी

बड़ी नटखट है बिल्ली रानी
कभी धूम मचाती कभी नाचती
घर का दूध पी जाती
जब उसको सूझे शैतानी
तब चूहों से करती मनमानी
शेर परिवार की सबसे छोटी
पूँछ बड़ी है छोटे कान
देखो-देखो इसकी शान
अगर चूहे को देख लेती
झटपट पीछे पड़ती
बड़ी नटखट है बिल्ली रानी

● शालू भगत, दूसरी,



● सुशीला कुमारी, दूसरी, कानपुर, उ.प्र.

झगड़ा
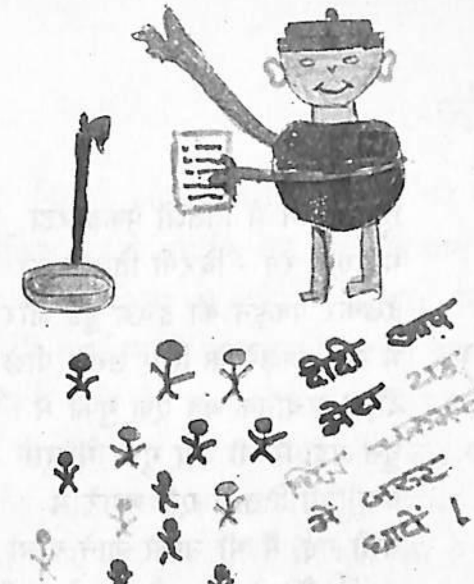
मैं एक देहात में रहता हूँ। उस गाँव की कम से कम दो हज़ार जनसंख्या है। हमारे मोहल्ले में अधिक पढ़े लिखे लोग रहते हैं। वहीं पर हमारा भी एक मकान है जिसमें नौ सदस्य रहते हैं। हमारे घर में खेती होती है हमारे बड़े भाई साहब गोदाम में सेल्समेन हैं और हमारे घर का वे ही ख़र्च उठाते हैं। मैं अभी पढ़ता हूँ।

एक दिन की बात है कि मैं अपने स्कूल से आ रहा था तो मैंने देखा कि मोहल्ले में ख़ूब शोर मचा हुआ है। मैं आगे बढ़ा तो एक आदमी मिला। मैंने उससे पूछा कि यहाँ पर क्या हो रहा है। उसने जवाब दिया कि तुम्हारी मम्मी जी और नानी जी का महाभारत हो रहा है। इसलिए यहाँ पर शोर हो रहा है। जब मैंने यह सुना तो मुझे इतनी शर्म आई कि वहीं पर खड़ा होकर सोचने लगा कि अब क्या किया जाए।

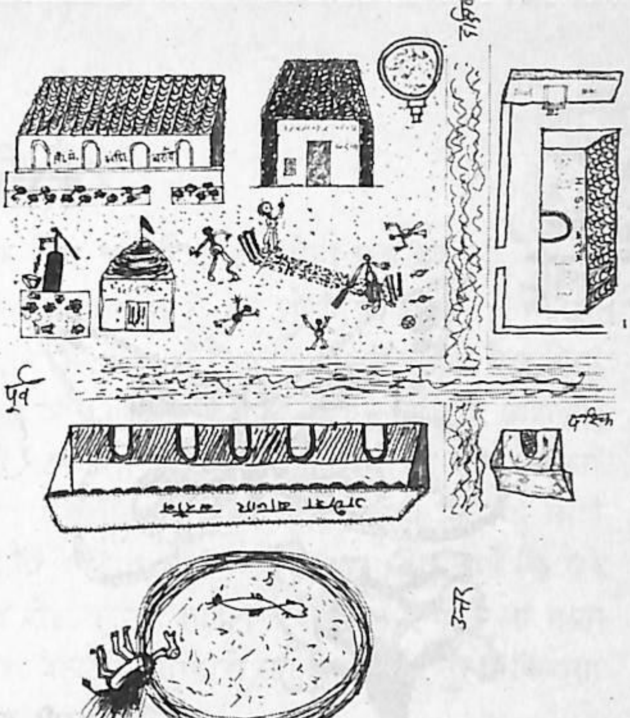
मैंने देखा कि सभी लोग हमारे घर की हँसी उड़ा रहे थे। मम्मी और नानी ख़ूब लड़ रही थी। वे उनको गाली दे रही थीं और वे उनको ज़ोर से गाली दे रही थीं। इतने में क्या हुआ कि मैंने अपनी गाय छोड़ दी तो वो सीधी नानी के घर पर चल दी। तो मेरी नानी जी उसको बाँधने के लिए आईं। और लड़ाई समाप्त हो गई।

मैंने अपनी नानी को देखा तो आग बबूला हो गया। मैंने उनको मारने की धमकी दी और गाली भी दे डाली। इससे हमारी नानी जी को इतनी शर्म लगी कि उसने एक दिन खाना भी नहीं खाया। कुछ लोगों से पता चला कि नानी जी कह रही थी आज से ये पकड़े कान, आज से कभी भी झगड़ा नहीं करूँगी। कुछ लोगों ने मुझे भी समझाया कि तुम्हें गाली नहीं देना था। मैंने भी कान पकड़ लिए और कहा कि मैं बड़े-बूढ़ों को कभी भी गाली नहीं दूँगा।

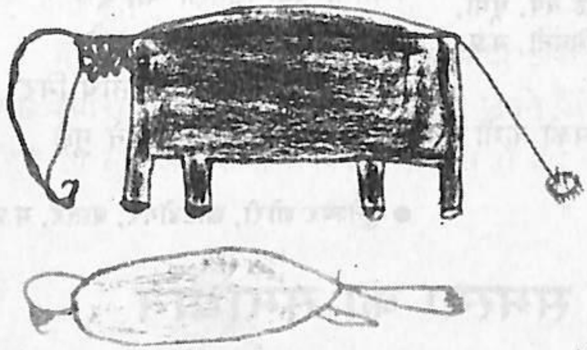
● जयराम प्रसाद पटेरिया, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.



किरण शर्मा, ब्यावरा, राजगढ़, म. प्र.



ममता तिवारी, मृदुला सोंधिया, दूसरी बराँव, सीधी, म. प्र.



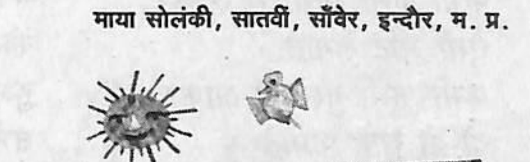
दिनेश, आठवीं, पालखंदा, उज्जैन, म. प्र.



माया सोलंकी, सातवीं, साँवेर, इन्दौर, म. प्र.



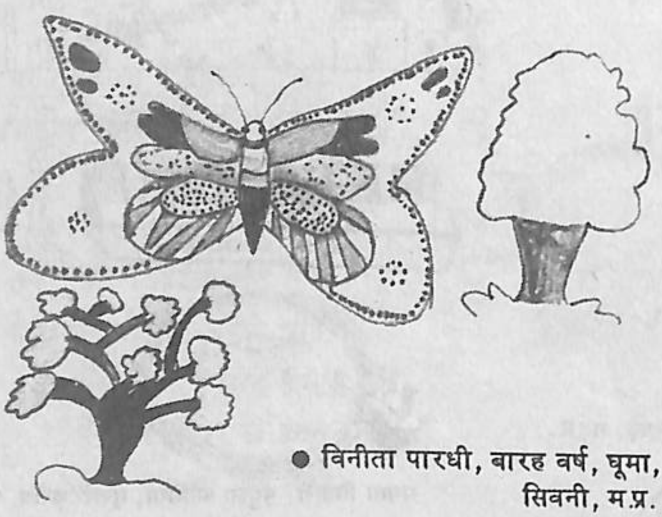
देवकल्याणी, तीसरी, किरगी, राजनांदगाँव, म. प्र.



जितेन्द्र लाड़, आठवीं, जावर, खण्डवा, म. प्र.



तितली



● विनीता पारधी, बारह वर्ष, घूमा, सिवनी, म.प्र.

एक दिन मैं तितली पकड़ रहा था। एक रंग - बिरंगी तितली को देखकर पकड़ने की इच्छा हुई और मैं उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ा। अचानक वह एक गुफा में घुस गई। मैं भी उस गुफा में घुस गया। वह तितली एक कमरे में चली गई, मैं भी उसमें जाने वाला था कि मैंने देखा, वहाँ पर दो हाथी जितनी बड़ी तितली थी। एक तितली ने आगे बढ़कर मुझे उठाकर पटक दिया। मैं नीचे गिर गया। मैं कहने लगा कि मुझे छोड़ दो तितली रानी मैं तुमको कभी नहीं पकड़ूँगा। तभी मेरे भाई ने मुझे उठाया। मैं नींद में पलंग से नीचे गिर गया था।

● धुनेश्वर शोरी, छोटेडोंगर, बस्तर, म.प्र.

गधेराम जी

मेरे प्यारे गधेराम जी
रहते हरदम खुश
कभी कभी गुस्से में आकर
करते हमको खुश
कभी कभी मस्ती में आकर
ऐसी लोट लगाते
कभी कभी गुस्से में आकर
दो दो लात जमाते
ये तो गधेराम कहलाते
कभी कभी गुस्से में आकर
पक्का राग सुनाते
तुमको मेरा राम राम जी
मेरे प्यारे गधेराम जी

● विनोद प्रजापत, दसवीं, नान्देड़, उज्जैन, म.प्र.

समस्या का समाधान

मेरी गर्मियों की छुट्टियाँ चालू हो गई थीं। मेरे फूफा जी की चिट्ठी आई। वह चिट्ठी उन्होंने मुझे कोटा आने के लिए डाली थी। जहाँ पता लिखा था वहाँ कोटा के आगे कोष्ठक में (राज.) इस तरह लिखा था। मैंने सोचा मेरे फूफा जी का नाम राजकुमार है जो शॉर्ट में लिख दिया होगा। कुछ दिन बाद बुआ आईं और मैं उनके साथ कोटा गई। वहाँ कई बोर्ड लगे थे, उन पर भी इसी तरह लिखा हुआ था। मुझे बहुत-बहुत अचम्भा हुआ कि फूफा जी का नाम सभी बोर्ड पर थोड़े ही लिखा हो सकता है। यही बात मैं सोचती रही। उस बात का समाधान न हुआ। मैंने उसे वैसा ही छोड़ दिया। तब मेरी उम्र दस वर्ष थी। मुझे मालूम ही नहीं था कि कोटा राजस्थान में है इसलिए राज. इस तरह लिखा है।

जब मैं कुछ बड़ी हुई तब मुझे पता चला कि इसका समाधान क्या है। तब बाद में मुझे बहुत हँसी आई कि यह सोचती थी बचपन में मैं। मैंने सभी को यह बात बताई तो सभी हँसे।

● दिव्याणी सिंघई, दसवीं, कोटा, राजस्थान

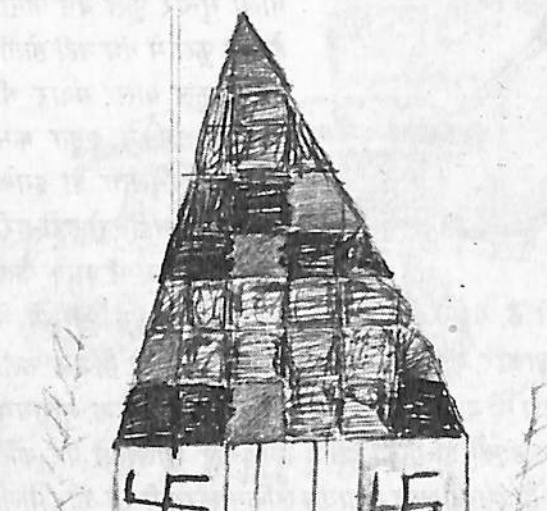


जंगल की सैर

एक दिन मैं और मेरा दोस्त जंगल की सैर करने के लिए चल दिए। हम दोनों एक ही साइकिल पर थे क्योंकि मेरे दोस्त के पास साइकिल नहीं थी। रास्ते में हम लोगों को एक बूढ़ा आदमी मिला जो चलने में बिल्कुल असमर्थ था। हमने उसे देखा और अपनी साइकिल पर बैठा दिया और मैं साइकिल से उतरकर पैदल ही चलने लगा। दोस्त और बूढ़ा आगे निकल गए क्योंकि वे साइकिल से थे। मैं पीछे छूट गया और थक भी गया था। मैं वहीं बैठ गया। पीछे से मेरे गाँव की ही एक बस आ रही थी। मैंने बस को रुकवाया और उस पर चढ़ गया। परिचालक ने मुझसे बारह रुपए किराया माँगा जबकि आठ रुपया लगता था। मैंने मजबूर होकर किराया दे दिया। वहाँ जाकर उतर गया जहाँ कि मेरे दोस्त और वह बूढ़ा व्यक्ति थे। मुझे बस से उतरते देख दोस्त तुरन्त साइकिल लेकर मेरे पास आ गया। दोस्त बोला, "मित्र इस बार इस बूढ़े को साइकिल पर नहीं बैठाऊँगा। तुम्हारी साइकिल और तुम्हीं किराया देकर आए हो।"

मैंने कहा, "नहीं मैं बस से चला आया ठीक किया क्योंकि यदि बूढ़े को सायकिल पर न बैठाता तो वह बेचारा वहीं बैठा रहता। उसके पास उतने पैसे भी तो न होंगे कि वह बस से आ जाता। इस बार भी बूढ़े को तुम ले चलना मैं पैदल या बस से आ जाऊँगा।"

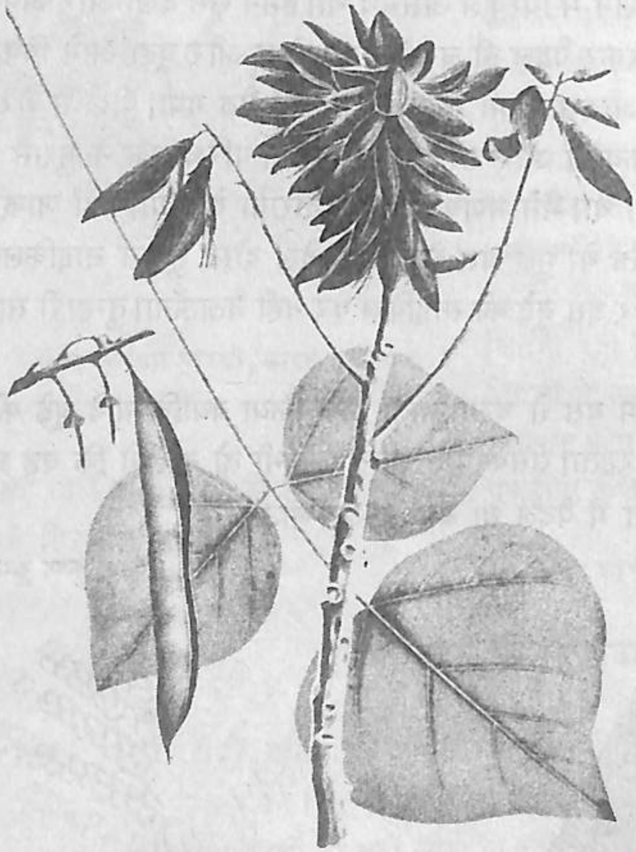
● कृष्ण कुमार विश्वकर्मा, दसवीं, अमरपुर





● रमेश, छठवीं, चौकड़ी, खिरकिया, होशंगाबाद, म.प्र.

मंदार



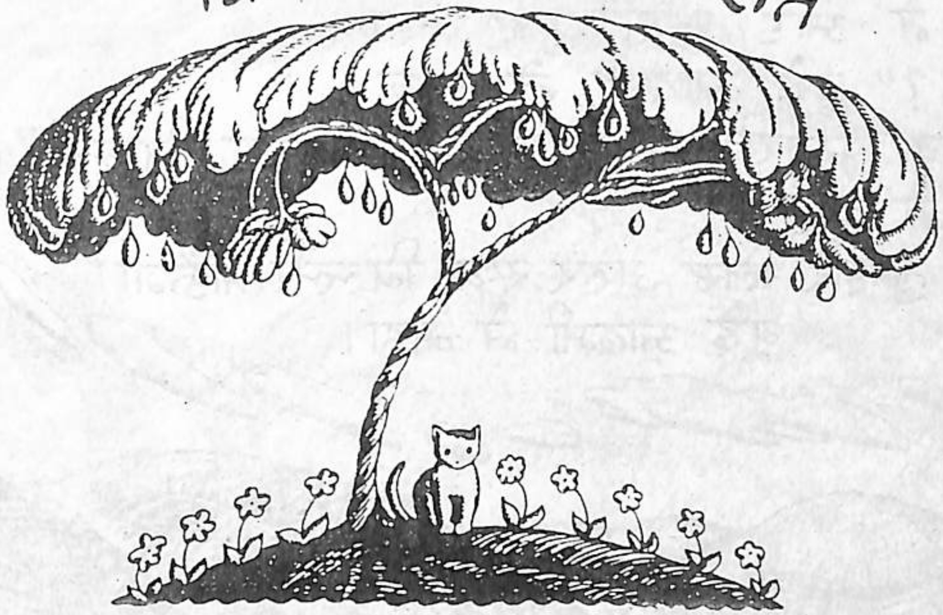
यह वृक्ष मुख्य रूप से सजावट वाले वृक्षों में गिना जाता है। भारत में यह पेड़ ज़्यादातर समुद्र के किनारे वाले इलाकों में पाया जाता है। सारे कोंकण के जंगलों और अण्डमान-निकोबार में खूब पैदा होता है। दूसरे जंगलों में भी मिलता है लेकिन कम संख्या में। यह पेड़ भारत का मूल निवासी है। इसकी कई जातियाँ अलग अलग देशों में मिलती हैं। बर्मा, जावा, मलेशिया आदि देशों में भी ख़ूब मिलता है।

यह ख़ूब लम्बा सीधे तने वाला पेड़ होता है। गर्मी के मौसम में भी यह हरा भरा रहता है। यह पेड़ जल्दी बढ़ता है। इसके तने पर अक़्सर लताएँ चढ़ जाती हैं जिससे इस पेड़ की सुन्दरता और बढ़ जाती है।

इसकी पत्तियाँ तीन-तीन उपपत्तियों में बँटी होती हैं। सर्दियाँ आते ही इस पेड़ के पत्ते झड़ने लगते हैं। नए पेड़ पर से जब पत्ते झड़ते हैं तो पेड़ पूरी तरह से ख़ाली नहीं होता। कहीं-कहीं कुछ पत्ते लगे रह जाते हैं। लेकिन पुराना पेड़ पूरी तरह से पत्रविहीन हो जाता है। फ़रवरी-मार्च में फूल खिलते हैं तब भी यह पत्रविहीन ही रहता है। फूल अकेले भी खिलते हैं और गुच्छों में भी। इसमें फूल डालियों के सिरों पर लगते हैं। ये फूल बड़े और चमकीले लाल रंग के होते हैं। पूरी तरह खिल जाने पर यह पाँच पंखुड़ियों वाला सुन्दर फूल बन जाता है। इस फूल में गंध नहीं होती। सफ़ेद फूल वाला मंदार भी होता है लेकिन बहुत कम संख्या में मिलता है। इसके बाद मई के महीने से हरी-हरी फलियों के रूप में इसके फल आते हैं, पकने पर ये काले हो जाते हैं। इन फलियों में अण्डाकार, बादामी-लाल से रंग के बीज होते हैं। एक फली में 12 बीज तक होते हैं। इस पेड़ की लकड़ी सफ़ेद, मुलायम और हल्की होती है। इसके तने और शाखाओं पर काँटे होते हैं। इसकी छाल मुलायम लेकिन खुरदुरी-सी और पीली या हरी-सी भूरी रंग की होती है।

इस पेड़ के पत्ते गाय-भैंस, बकरी को खिलाए जाते हैं। नए पत्तों की कढ़ी बनाकर खाई जाती है। सूखे पत्ते और छाल रंगने के काम में आते हैं। छाल से धागा भी बनाया जाता है। लाल रंग के फूलों से लाल रंग प्राप्त किया जाता है। इस पेड़ की लकड़ी डिब्बे और पेटियाँ बनाने में उपयोग होती है। इसकी छाल और पत्ते कई तरह की बीमारियों में दवा के रूप में इस्तेमाल होते हैं। ● ●

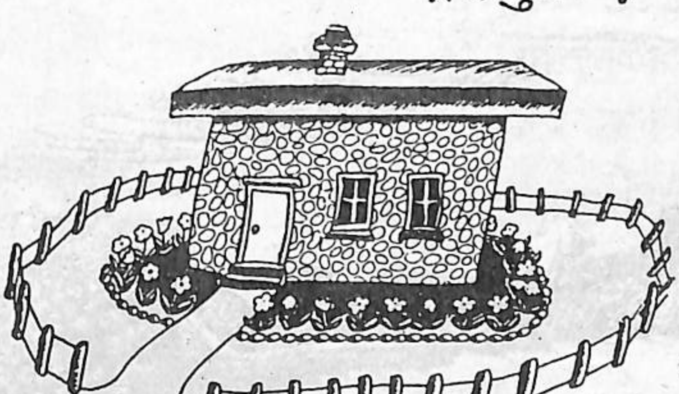
बिल्लियों की बारात



मूल पुस्तक : MILLIONS OF CATS (1928)

लेखिका : वैंडा गैग

प्रस्तुति : अरविन्द गुप्ता



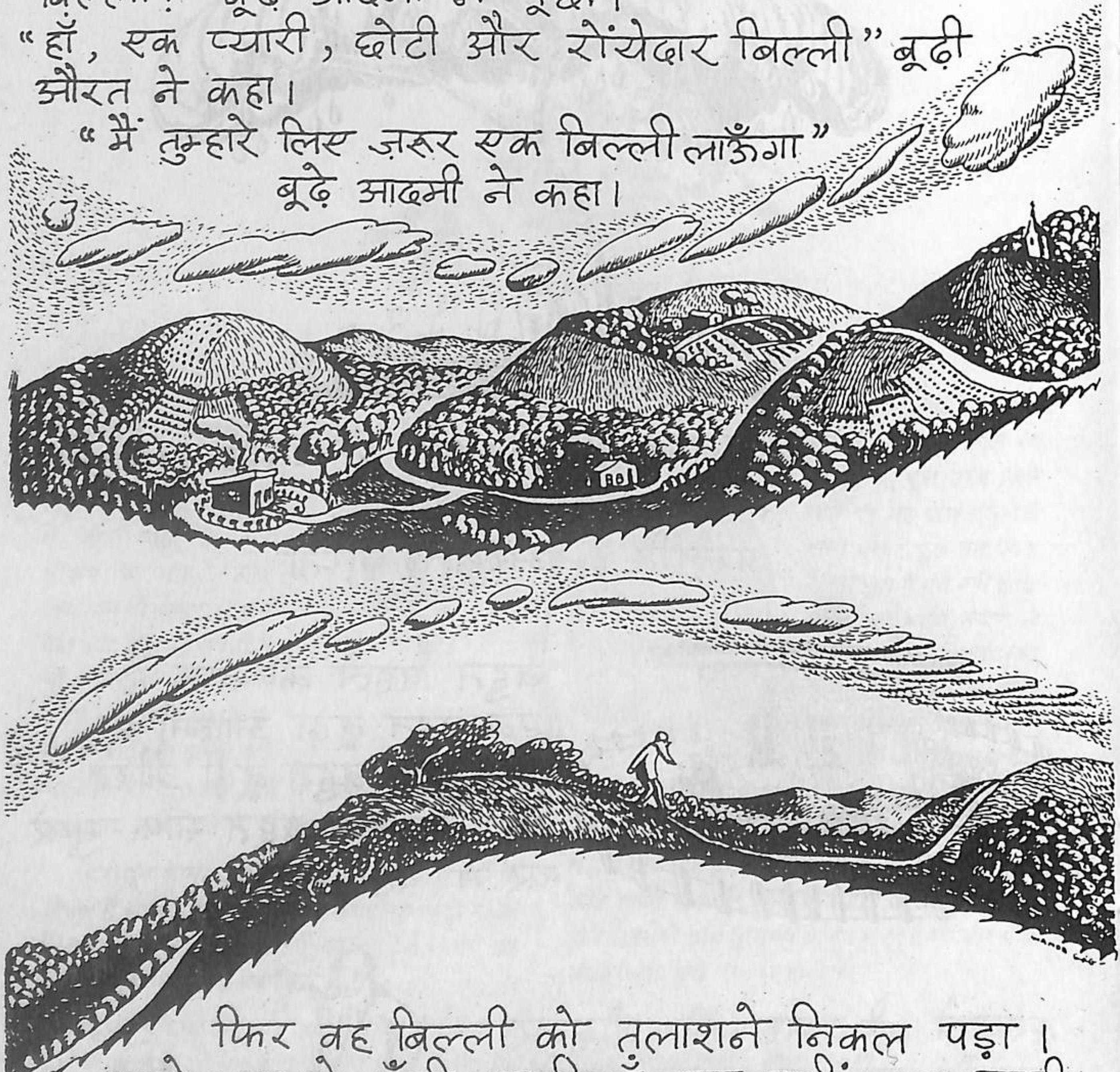
बहुत पहले की बात है। एक बहुत बूढ़ा आदमी था और एक बहुत बूढ़ी औरत थी। वह एक बहुत साफ-सुथरे घर में रहते थे।

दरवाज़े की जगह को छोड़कर घर के चारों ओर एक फूलों की क्यारी थी। परन्तु वे फिर भी खुश न थे। वह बहुत अकेलापन महसूस करते थे।



"काश हमारे पास अपनी एक बिल्ली होती" बूढ़ी औरत ने आह भरते हुए कहा।
"बिल्ली?" बूढ़े आदमी ने पूछा।
"हाँ, एक प्यारी, छोटी और रोंयेदार बिल्ली" बूढ़ी औरत ने कहा।

"मैं तुम्हारे लिए ज़रूर एक बिल्ली लाऊँगा" बूढ़े आदमी ने कहा।



फिर वह बिल्ली को तलाशने निकल पड़ा। उसने धूप से ढँकी पहाड़ियाँ पार करीं। वह ठण्डी घाटियों में से होकर गुज़रा। वह लगातार चलता रहा, चलता रहा। अंत में वह एक ऐसी पहाड़ी पर पहुँचा जो बिल्लियों से एकदम लदी हुई थी।



यहाँ भी बिल्ली
वहाँ भी बिल्ली
जहाँ भी देखो, वहाँ पे बिल्ली
चीं-ची, पों-पो, चिल्ला-पिल्ली
लाखों-करोड़ों, बिल्ला-बिल्ली



"वाह!" खुशी से बूढ़ा आदमी चिल्लाया। "अब मैं सबसे सुन्दर बिल्ली को चुन कर घर ले जा सकूँगा!" उसने एक बिल्ली चुनी। उसका रंग सफ़ेद था।

परन्तु जैसे ही वह चलने को हुआ उसे एक काली-सफ़ेद बिल्ली दिखाई दी। वह भी पहली बिल्ली के समान ही सुन्दर थी। उसने इस बिल्ली को भी साथ ले लिया।



फिर उसे एक रोंयेदार, सिलेटी बिल्ली दिखाई दी। वह भी रंग-रूप में औरों से कोई कम न थी।





इसलिए उसने उसे भी साथ ले लिया।
फिर उसे कोने में एक और बिल्ली दिखाई पड़ी। उसे इस खूबसूरत बिल्ली को छोड़ कर जाना कुछ ठीक नहीं लगा। उसने उसे भी साथ ले लिया।



बस तभी उस बूढ़े आदमी को एक बिल्ली का बच्चा दिखा जो काला और बेहद सुन्दर था।
"इसे छोड़ कर जाना तो बहुत शर्म की बात होगी" बूढ़े आदमी ने कहा। उसने उसे भी साथ ले लिया।

फिर उसे एक बिल्ली दिखी जिसकी पीठ पर चीते के बच्चे जैसी पीली और भूरी धारियाँ थीं।
"इसे तो लेकर जाना ही चाहिए" बूढ़ा आदमी चिल्लाया और उसने उस बिल्ली को भी साथ ले लिया।





कुछ ऐसा हुआ कि हर बार, जब भी, बूढ़ा आदमी अपना सिर उठाता, तो उसे एक और सुन्दर सी बिल्ली दिख जाती। वह उस बिल्ली को भी साथ में ले लेता। इसका नतीजा यह हुआ कि अंत में उसने सभी बिल्लियों को साथ में ले लिया।



अब वह वापिस चला। वह धूप से ढंकी पहाड़ियों और ठण्डी घाटियों को पार करता घर चला, जिससे कि वह बूढ़ी औरत को ढेरों सुन्दर बिल्लियाँ दिखा सके। उन हजारों, लाखों, करोड़ों बिल्लियों को उसके पीछे-पीछे चलते देख बड़ा अजीब-सा लग रहा था।



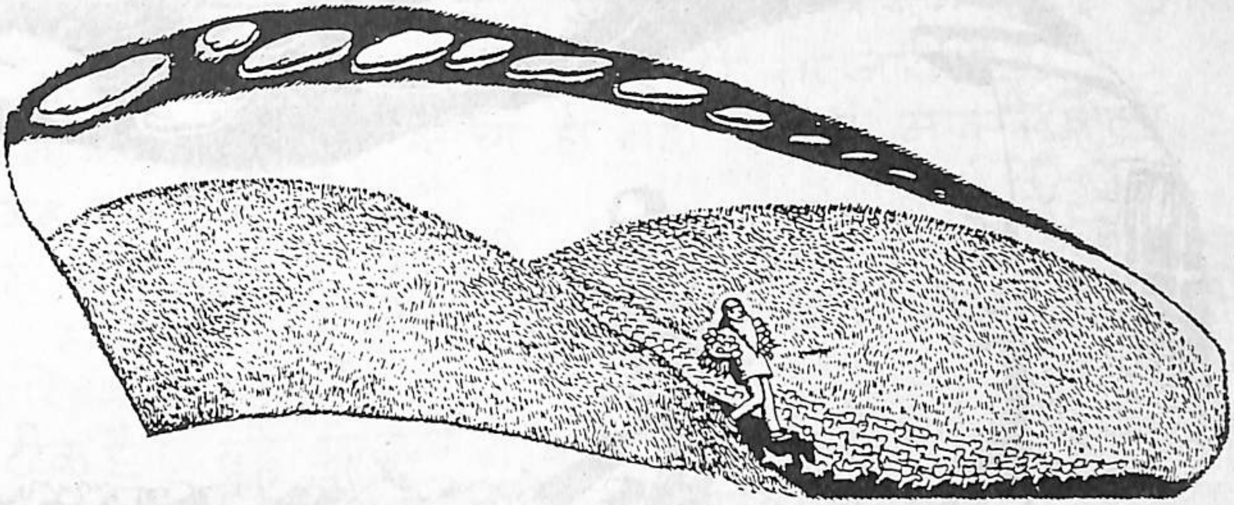
वह एक तालाब के पास पहुँचे।
"म्यांऊ - म्यांऊ ! हमें प्यास लगी है", वह हज़ारों, लाखों, करोड़ों बिल्लियाँ चिल्लायीं।



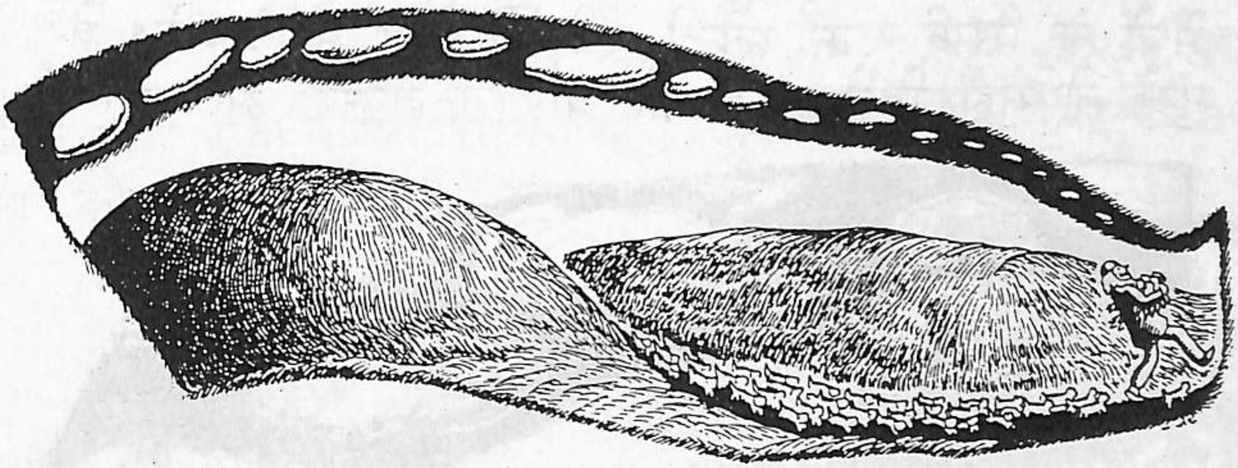
"फिक्र की कोई बात नहीं, यहाँ ढेर सारा पानी है" बूढ़े आदमी ने कहा।

हरेक बिल्ली ने एक-एक घूँट ही पानी पिया कि पूरा तालाब ही ख़ाली हो गया।





"म्यांऊ, म्यांऊ! अब हमें भूख लगी है" एक साथ वह हजारों, लाखों, करोड़ों बिल्लियाँ चिल्लायीं।

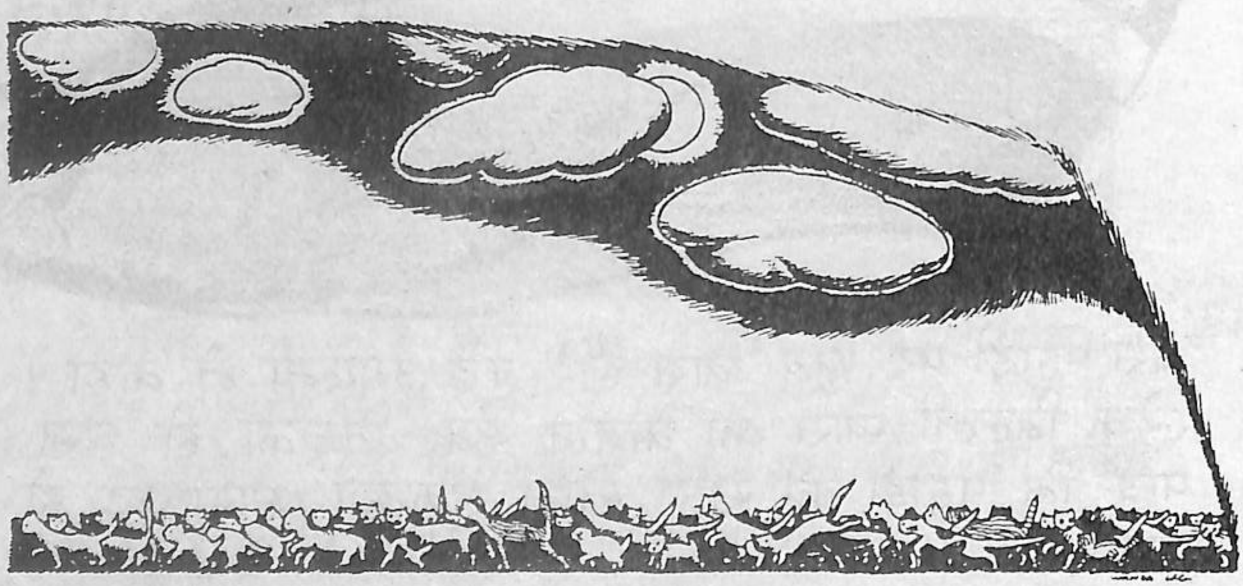


"इस पहाड़ी पर ख़ूब घास है" बूढ़े आदमी ने कहा। हरेक बिल्ली घास का केवल एक तिनका ही चख पाई कि पहाड़ी की सारी घास एकदम सफाचट्ट हो गई।





थोड़ी ही देर में बूढ़ी औरत ने उन्हें आते हुए देखा, "अरे!" वह चिल्लाई "यह तुमने क्या किया ? मैंने तो सिर्फ़ एक छोटी सी बिल्ली माँगी थी। पर मुझे तो यहाँ बिल्लियों की बारात नज़र आ रही है।



यहाँ भी बिल्ली
वहाँ भी बिल्ली
जहाँ भी देखो, वहाँ पे बिल्ली
चीं-ची, पों-पो, चिल्ला-पिल्ली
लाखों - करोड़ों, बिल्ला-बिल्ली

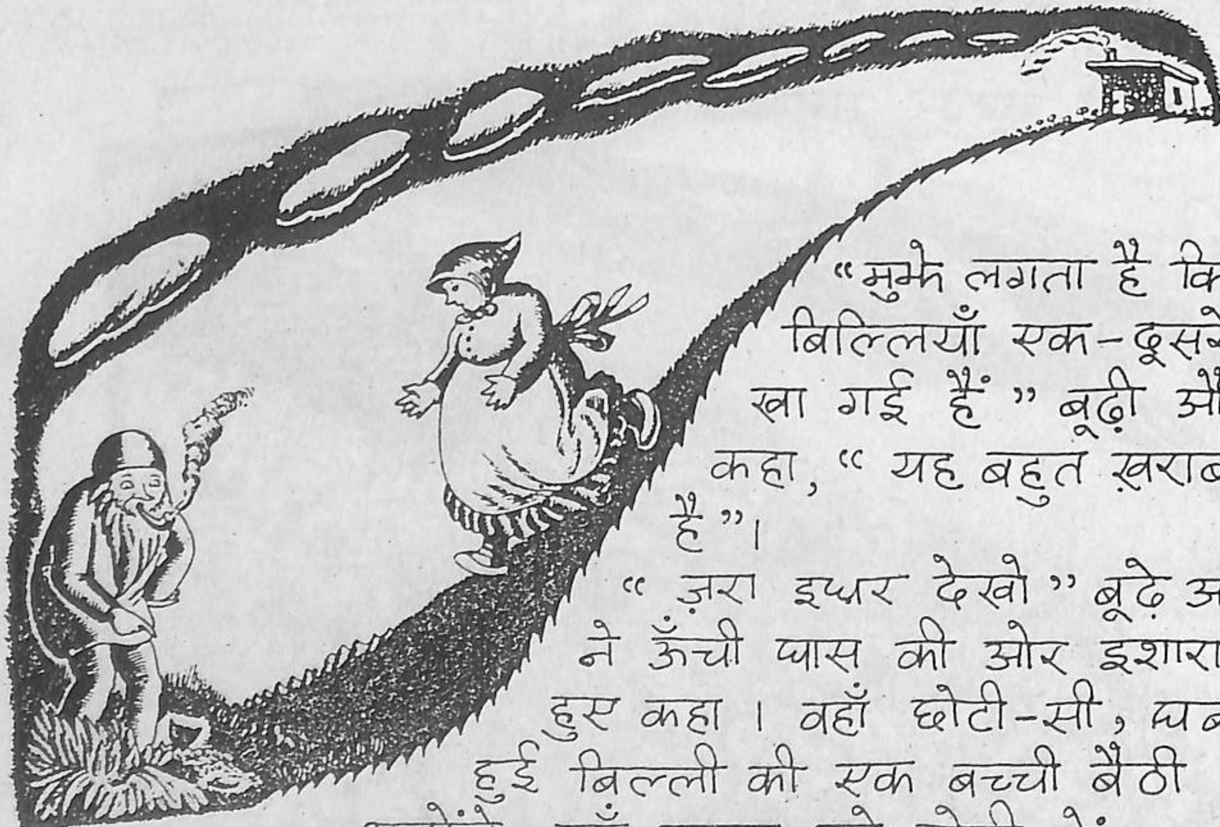
"हम इतनी बिल्लियों को कैसे खाना खिला पायेंगे?" बूढ़ी औरत ने पूछा "यह तो हमारा पूरा घर ही खा जायेंगी"।
"मैंने इस बारे में तो सोचा ही नहीं" बूढ़ा आदमी बोला, "अब हम क्या करें?"
बूढ़ी औरत कुछ देर सोचती रही फिर उसने कहा "मुझे मालूम है! हम बिल्लियों को ही निर्णय लेने देंगे कि उनमें से कौन हमारे पास रहेगी"।
"ठीक है" बूढ़े आदमी ने कहा और उसने सारी बिल्लियों को बुलाकर पूछा "तुम में से सबसे सुन्दर कौन है?"
"मैं हूँ!"
"मैं हूँ!"
"नहीं, मैं सबसे सुन्दर हूँ! मैं हूँ!"
"नहीं, मैं हूँ! मैं हूँ! मैं हूँ!" हजारों, लाखों, करोड़ों बिल्लियाँ एक साथ चिल्लायीं, क्योंकि हरेक बिल्ली अपने आप को सबसे सुन्दर समझती थी।



फिर सभी बिल्लियाँ आपस में लड़ने लगीं।



बिल्लियाँ एक-दूसरे को नोचने-खरोंचने लगीं। उन्होंने इतनी ज़ोर का शोर मचाया कि बेचारा बूढ़ा आदमी और बेचारी बूढ़ी औरत जल्दी से दौड़ कर घर में घुस गए। उन्हें यह सब लड़ाई-झगड़ा बिल्कुल अच्छा न लगा। परन्तु कुछ देर बाद बाहर से आवाज़ आना बन्द हो गई। तब बूढ़े आदमी और बूढ़ी औरत ने खिड़की से बाहर झाँक कर देखा। उन्हे एक भी बिल्ली नज़र नहीं आई!



"मुझे लगता है कि सारी बिल्लियाँ एक-दूसरे को खा गई हैं" बूढ़ी औरत ने कहा, "यह बहुत ख़राब बात है"।

"ज़रा इधर देखो" बूढ़े आदमी ने ऊँची घास की ओर इशारा करते हुए कहा। वहाँ छोटी-सी, घबराई हुई बिल्ली की एक बच्ची बैठी थी। उन्होंने वहाँ जाकर उसे गोदी में उठा लिया। वह एकदम दुबली-पतली और देखने में मरियल सी थी।

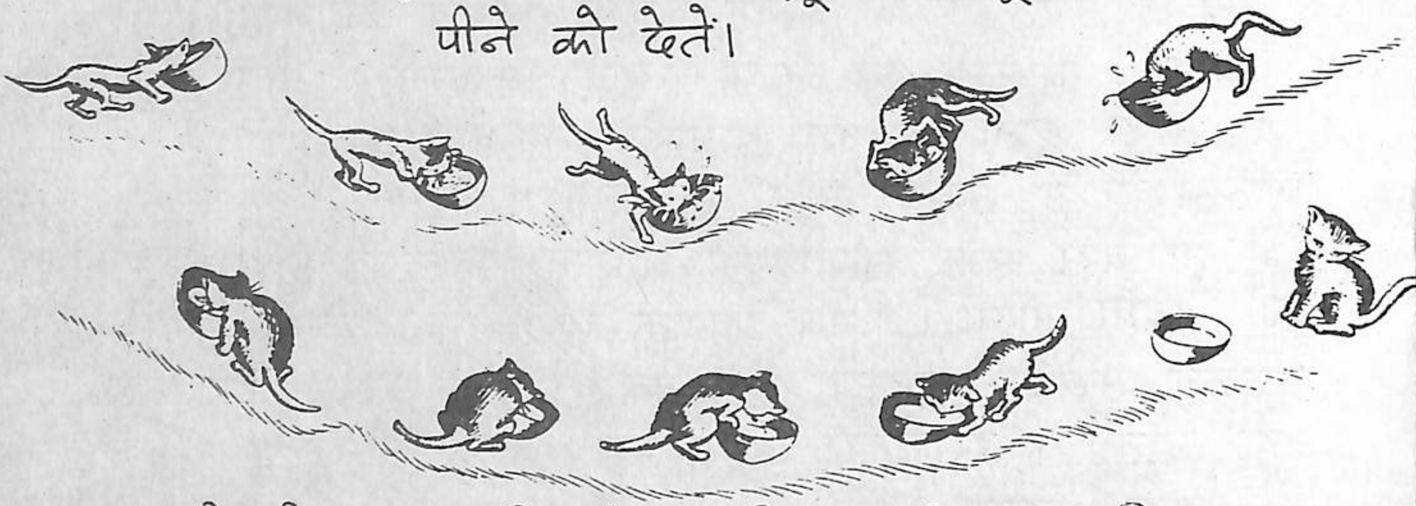
" बेचारी, बिल्ली की बच्ची " बूढ़ी औरत ने कहा।
" प्यारी, बिल्ली की बच्ची " बूढ़े आदमी ने कहा,
" यह कैसे हुआ कि उन हज़ारों, लाखों, करोड़ों बिल्लियों ने तुम्हें नहीं खाया ? "
" मैं तो बस एक छोटी सी घरेलू बिल्ली हूँ " बिल्ली का बच्चा बोला। "जब आपने पूछा कि कौन-सी बिल्ली सबसे सुन्दर है, तब मैं चुप रही और कुछ नहीं बोली। इसलिए मुझ पर किसी ने कुछ ध्यान ही नहीं दिया "।





वह उस बिल्ली की बच्ची को घर के अन्दर ले गए। वहाँ बूढ़ी औरत ने उसे गर्म पानी से नहलाया और ब्रुश से उसके मुलायम और चमकीले बाल संवारे।

हरेक रोज़ वह बिल्ली को ख़ूब सारा दूध
पीने को देते।



जल्दी ही वह अच्छी और मोटी-ताज़ी हो गई।



"आख़िर में हमें एक प्यारी-सी बिल्ली मिल ही गई" बूढ़ी औरत ने कहा।
"यह दुनिया की सबसे सुन्दर बिल्ली है" उस बूढ़े आदमी ने कहा। "मुझे इसके बारे में पता है क्योंकि मैंने हज़ारों, लाखों, करोड़ों बिल्लियाँ देखी हैं। परन्तु उन में से कोई भी बिल्ली इस जैसी सुन्दर नहीं थी।





बन्दर जी!

बन्दर जी! बन्दर जी!!
पास ज़रा बैठो,
पेड़ों की फुनगी से
ऐसे ना ऐंठो

बन्दर जी! बन्दर जी!!
थोड़ा मुस्काना,
बहुत हुई है खों-खों
हो जाए गाना

बन्दर जी! बन्दर जी!!
क्यों इतना उछलो?
बेमतलब पात-फूल
ऐसे ना कुचलो!!

बन्दर जी! बन्दर जी!!
आज तो बताओ,
आख़िर क्यों तुम अपना
घर नहीं बनाओ?

❑ डॉ. हरीश निगम
चित्र : हुताराम अधिकारी

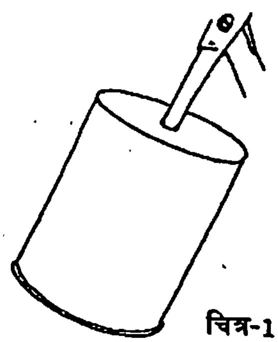




धौंकनी पम्प

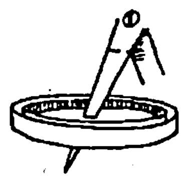
पम्प तो तुमने कई देखे होंगे - पानी खेतों तक पहुँचाने का मोटर पम्प, ज़मीन के नीचे का पानी ऊपर खींचने का हैण्डपम्प, पीपे में से घासलेट निकालने का पम्प, साइकिल में हवा भरने का पम्प....। बढ़ाते जाओ तो सूची बढ़ती ही जाती है। और शायद तुमने धौंकनी भी देखी हो कभी। तो इस बार धौंकनी की मदद से पानी चढ़ाने का पम्प बनाने की जुगाड़ है।

पम्प बनाने के लिए फ़िल्म की रील की दो डिब्बयाँ चाहिए होंगी। आजकल ऐसी डिब्बियाँ आसानी से फ़ोटो स्टूडियो वालों के यहाँ मिल जाती हैं। पर अगर फ़िल्म की डिब्बी नहीं मिले तो लगभग उसी आकार और नाप की कोई दूसरी प्लास्टिक की डिब्बी जुगाड़नी होगी तुम्हें। यह ख़्याल रखना कि डिब्बी का ढक्कन बिल्कुल फिट हो। इसके अलावा तुम्हें ज़रूरत होगी 15 से.मी. लम्बे साइकिल के ट्यूब, बॉलपेन की रीफ़िल और पंचर सोल्यूशन की।



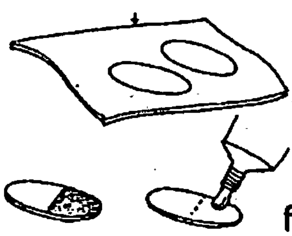
चित्र-1

सामान बटोर लाए? बस अब चित्र देखते जाओ और बनाते जाओ। सबसे पहले एक डिब्बी के पेन्दे में कील या डिवाइडर की नोक से छेद बना लो। इस छेद में कैंची की नोक घुमाकर इसे इतना बड़ा कर लो कि इसका व्यास लगभग 1 से.मी. का हो जाए (चित्र-1)। छेद के किनारों पर अगर प्लास्टिक उठी हुई हो तो उसे ब्लेड से सावधानी से काट दो। ऐसा ही एक छेद डिब्बी के ढक्कन में भी बनाओ (चित्र-2)।

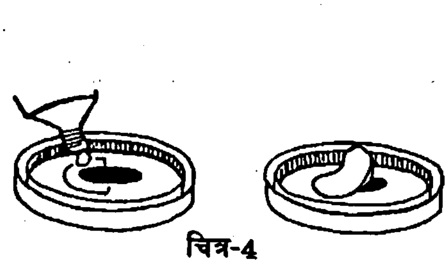


चित्र-2

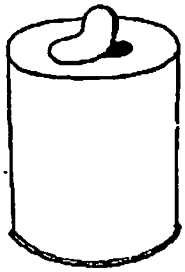
अब साइकिल के ट्यूब की बारी। इसमें से दो गोल वाशर काटने हैं। इनका व्यास 1.5 से.मी. बराबर होगा। चित्र-3 के हिसाब से इनके आधे-आधे हिस्से पर पंचर सोल्यूशन लगाओ। फिर छेद वाले ढक्कन में भी अन्दर की तरफ से पंचर सोल्यूशन लगाओ - आधे छेद के इर्द-गिर्द और उस पर वाशर को चिपका दो। ध्यान रखना कि आधा ही वाशर चिपके। बाक़ी आधा दरवाज़े की तरह खुलने और बन्द होने के लिए छूटा रहेगा (चित्र-4)। यानी यह वाशर अब वाल्व का काम करेगा। जब इसे ढक्कन के अन्दर की ओर से दबाया जाए तो यह बन्द ही रहेगा, जबकि ऊपर से दबाने पर यह आसानी से खुल जाएगा।



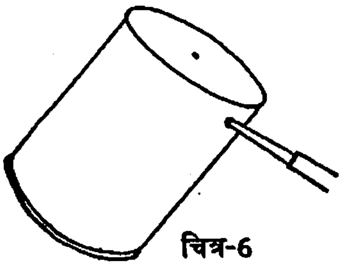
चित्र-3



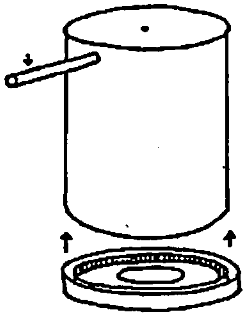
चित्र-4



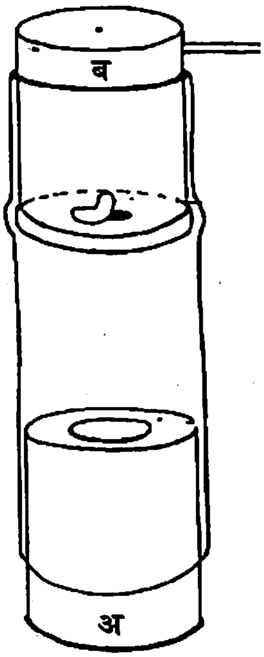
चित्र-5



चित्र-6



चित्र-7



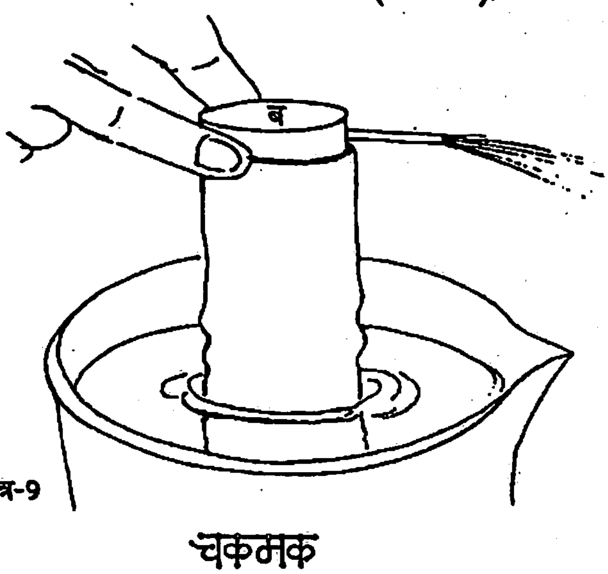
चित्र-8

इसी तरह दूसरे वाशर को डिब्बी में बने छेद पर बाहर की ओर से चिपकाओ। इस बार भी आधा ही चिपकाना है (चित्र-5)।

अब आई दूसरी डिब्बी की बारी। इसकी दीवार पर एक जगह एक छोटा-सा छेद करो (चित्र-6)। इस छेद में बालपेन की रीफ़िल फिट कर दो। अब इस डिब्बी पर वाशर लगा ढक्कन लगा दो (चित्र-7)।

जो साइकिल की ट्यूब लाए थे तुम, उसकी जाँच कर लो कि कहीं से कटा-फटा न हो। इस ट्यूब में चित्र-8 की तरह दोनों ओर से एक-एक डिब्बी घुसा दो। ट्यूब के अन्दर दोनों डिब्बियों के बीच लगभग 7-8 से.मी. की दूरी होगी। बीच के हिस्से का ट्यूब ही धौंकनी का काम करेगा।

अब ज़रा एक बाल्टी भरकर पानी तो ले आओ। भई, नहीं लाओगे तो पम्प को चलाकर देखोगे कैसे? हाँ, अब नीचे वाली डिब्बी (अ) को पानी में डुबोकर ऊपर वाली (ब) को नीचे की ओर दबाओ और छोड़ो। ऊपर वाली डिब्बी की ऐसे ही दो-चार बार उठ्ठक-बैठक करवाने पर पम्प में से तेज़ी से पानी बाहर आएगा (चित्र-9)।



चित्र-9

• अरविन्द गुप्ता

विशेष

गिर वन के मालधारी

□ नन्दिनी ओझा

इनके पूर्वजों ने गिर के जंगलों के पहाड़ों, टीलों, नदियों और झरनों के नाम रखे थे। अनादि काल से ही ये मालधारी गिर का एक अभिन्न हिस्सा बने हुए हैं। आज भी जबकि इनकी अधिकतर बस्तियाँ जंगल से हटा दी गई हैं, जो बची हैं उनमें साफ़ देखा जा सकता है कि कैसे ये इन जंगलों में पूरी तरह से रचे-बसे हुए हैं। ज़ाहिर है कि इन जंगलों के चप्पे-चप्पे और रग-रग से ये मालधारी परिचित हैं। भयानक अंधेरी रातों में भी ये जंगल के किसी भी हिस्से में अपना रास्ता ढूँढ लेते हैं। ये यहाँ के हरेक शेर से वाकिफ़ हैं - उसके स्वभाव और उसकी जागीर की भी पहचान है इन्हें। ये जानते हैं कि कौन से शेर या शेरनी खूँखार हैं, कौन से शान्त। तभी तो ये पर्यटकों को शेर दिखाने सुरक्षित ले जाते हैं - कभी दूर से ही, तो कभी बहुत क़रीब से। ये यहाँ तक खबर रखते हैं कि पिछली रात जंगल के किस हिस्से में कोई शिकार हुआ है और वह किसने किया है – शेर ने या तेंदुए ने। कौन से शेर और शेरनी साथ-साथ रह रहे हैं, कौन-सी शेरनी का बच्चा होने वाला है, कौन जानवर घायल है और कौन बीमार....

बन्दरों की चीख-पुकार हिरणों के संकेत सुनकर या देखकर ये आसानी से बता देते हैं कि ये चेतावनी भरी आवाज़ें थीं या जानवरों की आपसी बातचीत। यह सब क्यों न हो। ये मालधारी पीढ़ियों से इन्हीं गिर जंगलों में रहते जो आए हैं। यहीं अपने मवेशी चराते और दूध-घी का धन्धा करते इन्हें सदियाँ गुज़र गई हैं। पन्द्रह साल के बच्चे तक शेर और तेंदुओं से भरे जंगल में अकेले अपने गाय-बैल चराते-फिरते हैं। और रोज़ शाम उन्हें सुरक्षित घर लौटा लाते हैं। चाहे शेरों के किसी झुण्ड को कितनी ही भूख लगी हो और हाथ में एक इकलौती लाठी थामे कोई बच्चा कितना ही असहाय क्यों न दिखता हो, किसी शेर की हिम्मत नहीं कि उसके मवेशी पर हमला करे। यह सब ऐसा लगता है जैसे इन जानवरों और मालधारियों के बीच कोई आपसी समझ है, समझौता है। जैसे ये दोनों एक-दूसरे के साथ-साथ जीने के हक़ को समझते हैं, उसकी इज़्ज़त करते हैं। एक बहुत ही सुन्दर से तालमेल में जीते हैं ये लोग।

लेकिन यह सब तो पहले की बातें हैं - अतीत की। अब यहाँ ऐसा कुछ नहीं रहा। कुछ साल पहले जंगल और उसके जानवरों को बचाने के नाम पर, यानी अभयारण्य बनाने के लिए, मालधारियों की बस्तियाँ गिर जंगलों से हटा दी गईं। आज यहाँ गिनी-चुनी बस्तियाँ अपना अनिश्चित भविष्य लिए खड़ी हैं। जंगल के

अपने घरों से हटाए गए कुछ मालधारियों को मुआवज़े के बतौर वन-विभाग में गार्ड की नौकरी दी गई। इन गार्डों का काम पूरे वन विभाग में सबसे जोखिम भरा और मुश्किल है। पर पद और अधिकार की सीढ़ी में यह सबसे नीचे हैं और पगार भी सबसे कम। इन्हें रात-दिन जंगलों की सुरक्षा करनी होती है। जंगल में जानवरों के बीच तो ये पहले भी रहते थे, पर अब इन्हें जंगल को, जानवरों को, लकड़ी को तस्करों से भी बचाना होता है। और ये तस्कर कोई मामूली चोर नहीं होते। कई बार तो इनकी पहुँच बहुत दूर-दूर तक होती है।

मैं बचपन से ही गिर के जंगलों में जाती रही हूँ। घने जंगल में घूमते हुए जो रोमांच महसूस होता है, वह मुझे हमेशा से भाता आया है। हम हमेशा रामसिंह नाम के एक फॉरेस्ट गार्ड के साथ जंगल जाते थे। रामसिंह मुझे और मेरे परिवार को जंगल घुमाने ले जाता था, तमाम तरह के जानवर दिखाता, उनकी आदतें समझाता, उनकी चेतावनी भरी आवाज़ें पहचानना सिखाता। उसकी कहानियों और हिदायतों से हम कभी नहीं थकते। हर बार रामसिंह से सीखने को कितना कुछ नया होता था। कई बार अंधेरी रात में हम पैदल जंगल में घूमते थे - जानवरों की तलाश में। पर रामसिंह का साथ इतनी सुरक्षा देता था कि हमें कभी भी डर नहीं लगा। गिर की ही तरह, रामसिंह के हुनर और ज्ञान, उसकी ताक़त और निडरता ने मुझे हमेशा ही विस्मित और प्रभावित किया है।

वह मुझे अपनी बचपन की कहानियाँ सुनाता। तेरह साल की उम्र में उसने अकेले मवेशी चराना शुरू किया था। अपने गाय-भैंस जंगल में छोड़कर वह दिन भर जंगल की खोजबीन करता रहता था, जंगल को समझने में लगा रहता। उसने वह कहानियाँ भी सुनाईं जो उसे अपने पूर्वजों से विरासत में मिली थीं। जंगल के हर हिस्से का नाम उसने बताया और किसी जगह का कोई खास नाम क्यों रखा गया था, यह भी। रामसिंह सरल, बिना पढ़ा-लिखा फ़ॉरेस्ट गार्ड है। शायद उस समय वह महीने में हज़ार रुपए भी नहीं कमाता होगा। अपने आठ लोगों के परिवार के साथ वह जंगल के बीच मिट्टी और फूस के बने घर में रहता था। रामसिंह के साथ बिताया हुआ समय आज तक मेरी सबसे ज़्यादा हसीन यादों में से एक है।

यह दौरा भी गिर के मेरे हर कभी के दौरों में से एक था। वहाँ पहुँचते ही मैं रामसिंह के घर की ओर चल पड़ी - उसी शाम उसके साथ जंगल जाने का समय तय करने। उसने मुझे दोपहर के खाने के लिए रोक लिया। उसके घर एक और गार्ड था - वह भी मालधारी। रामसिंह ने उससे मेरा परिचय करवाया।

उसका नाम फूलसिंह था। फूलसिंह के चेहरे, हाथों और छाती पर गहरे घाव के निशान थे। मैंने उससे इन घावों के बारे में पूछा। उसने बताया कि कुछ

साल पहले किसी मशहूर अमरीकी वन्य जीवन पत्रिका का एक गोरा आदमी शेरों के फ़ोटो खींचने आया था। उसे प्रेमालाप करते हुए शेरों के फ़ोटो खींचने में खास दिलचस्पी थी। वन विभाग के अफ़सरों ने फूलसिंह को आदेश दिया कि वह उस विदेशी की मदद करे। फूलसिंह उस फ़ोटोग्राफ़र को ढूँढ-ढाँढकर उस जगह ले गया जहाँ शेर-शेरनी का एक जोड़ा प्रेमालाप कर रहा था। फ़ोटोग्राफ़र बहुत खुश था। वह पास जाकर शेरों के फ़ोटो खींचना चाहता था। फूलसिंह ने उसे आगाह करते हुए दूर रहने को कहा। क्योंकि एक तो वैसे ही ऐसे समय शेर बहुत गुस्सैल हो जाते हैं। ऊपर से उसने यह भी पहचान लिया था कि यह शेर स्वभाव से ही बहुत खूँखार था। पर गोरे फ़ोटोग्राफ़र ने फूलसिंह की चेतावनी की ओर ध्यान नहीं दिया। वह फ़ोटो खींचते-खींचते शेर-शेरनी के क़रीब पहुँच गया और अचानक शेर ने उस पर छलाँग लगा दी। उस विदेशी को बचाने के लिए फूलसिंह उनके बीच में कूद पड़ा। शेर ने फूलसिंह को बुरी तरह घायल कर दिया। यह चमत्कार ही था कि उसकी जान बच गई। उसे दो महीने तक अस्पताल में रहना पड़ा। बाद में उसे फिर अपनी वही नौकरी वापस मिल गई। मुझे पक्का यक़ीन है कि उन फ़ोटोग्राफ़ों की दुनिया भर में तारीफ़ हुई होगी और फ़ोटोग्राफ़र को उसकी बहादुरी और फ़ोटोग्राफ़ी के लिए कई ख़िताब मिले होंगे। आज शायद वन्य जीवन की फ़ोटोग्राफ़ी के क्षेत्र में वह एक जाना-माना नाम होगा। पर फूलसिंह के जीवन में कुछ भी नहीं बदला - हमेशा के लिए उसके शरीर पर बने गहरे, बदशक्ल घावों के अलावा।

लेकिन उस दिन वन विभाग के अतिथि गृह में सब कुछ बदला हुआ दिख रहा था। बहुत सारे छोटे-बड़े अफ़सरों की भरमार थी वहाँ! वे सब जीपों से आ-जा रहे थे - गिर की शान्ति को भंग करते हुए। ऐसा लगता था जैसे कोई बड़ा अफ़सर आया हो। मेरा अन्दाज़ ग़लत नहीं था। जिला वन अधिकारी जंगल के दौरे पर आया था।

उस शाम रामसिंह और मैं गाड़ी से सातधार गए क्योंकि एक तो शाम के बाद कहीं और जाना मना था। और फिर रामसिंह की रात की ड्यूटी थी जिसके लिए उसे जल्दी वापस लौटना था। वापसी में एक जीप ने काफ़ी देर तक हमारा पीछा करने के बाद हमें रोका। जीप में बैठे अफ़सरों ने मेरे साथ जंगल जाने के लिए रामसिंह की खूब ख़बर ली। उनका कहना था कि उनके आदेशों के बग़ैर वह मुझे जंगल कैसे घुमा रहा था? रामसिंह उस वक़्त ड्यूटी पर तो नहीं था पर वह उनकी डाँट-फटकार चुपचाप सुनता रहा। मैं बहुत परेशान हुई। पर यह सोचकर चुप रही कि मेरे कुछ कहने से रामसिंह और समस्या में फँस सकता था। हम लोग तलाला की ओर बढ़ लिए।

रास्ते में हमें दो और अफ़सरों ने रोका। ये अपने-अपने परिवार के साथ जंगल का रात का नज़ारा देखने आए थे। उनकी जीप के टायर पंक्चर हो गए थे और ये रात में जंगल में भटक गए थे। चूँकि उनके पास अतिरिक्त टायर नहीं थे इसलिए इन लोगों ने साथ आए दोनों गार्डों को पंक्चर बनवाने तलाला भेजा था। तलाला उस जगह से लगभग 10 किलोमीटर दूर था और पैदल जाकर वापस आने में गार्डों को और दो-तीन घण्टे तो लगने वाले थे। इन अफ़सरों और उनके परिवारवालों के चेहरों पर घबराहट और डर साफ़ देखा जा सकता था। अफ़सरों ने रामसिंह को तब तक उनके साथ रुकने का हुक्म दे डाला जब तक उनके गार्ड वापिस नहीं आते। रामसिंह के पास कोई और रास्ता नहीं था। उसे लगभग एक घण्टे बाद ही अपनी रात की ड्यूटी पर नाके पर जाना था, पर फिर भी वह रुक गया। रात अंधेरी होती जा रही थी और शेरों की दहाड़ तेज़। पर रामसिंह के रुकने के बाद उन अफ़सरों और उनके परिवारवालों के चेहरों की राहत देखते बनती थी।

हमने तय किया था कि अगले रोज़ रामसिंह और मैं दिन में जंगल जाएँगे। उस दिन रामसिंह की छुट्टी थी। जैसे ही हम निकले कि रामसिंह को रोककर बताया गया कि उसे डी.एफ.ओ. साहब ने बुलवाया है। डी.एफ.ओ. थोड़ी दूर पर ही खड़ा था - जीन्स की पैण्ट पहने, स्मार्ट-सा एक जवान आदमी - छोटे-बड़े अफ़सरों से घिरा हुआ। एक अफ़सर ने रामसिंह को वहीं रुकने को कहा और एक-दूसरे गार्ड को मेरे साथ जाने का हुक्म दिया। मैंने देखा कि रामसिंह चुपचाप, सिर झुकाए उस अफ़सर की डाँट सुन रहा था।

रामसिंह तो जंगल में कितनी निडरता से घूमता था। शहर के कंक्रीट जंगल से आए इन अफ़सरों ने उसकी जो गत बना दी थी वह मुझसे देखा नहीं गया। मैंने डी.एफ.ओ. के पास जाकर उससे वह सब कहा जो एक आम इंसान की तरह मुझे महसूस होता था। मैंने उनसे कहा कि अगर ये गार्ड न होते तो उनमें से एक भी अफ़सर जंगल में पैर रखने की भी हिम्मत नहीं कर पाता। एक अकेले निहत्थे रामसिंह के साथ मैं रात में, पैदल पूरे गिर के किसी भी हिस्से में जा सकती हूँ - पूरी तरह से महफ़ूज़। जबकि उन अफ़सरों के साथ तो गाड़ी में, दिन में भी कहीं जाने का सवाल नहीं उठता क्योंकि उन्हें तो जंगल में दिशाओं का ज्ञान भी नहीं। मैंने उनसे कहा कि इन गार्डों के बग़ैर पूरा वन विभाग किसी काम का नहीं। क्योंकि ये ही तो जंगल की चौकीदारी करते हैं, जानवरों का सर्वे करते हैं, शिकारों का पता लगाते हैं, वन्य जीवों की प्रदर्शनियाँ आयोजित करते हैं, छात्रों के कैम्प लगाते हैं, उन्हें सीखने-पढ़ने में मदद करते हैं, फ़ोटोग्राफ़रों को फ़ोटो खींचने में मदद करते हैं, बीमार और घायल जानवरों की देखभाल

करते हैं, अफ़सरों के लिए खाना बनाते हैं, उनकी गाड़ियाँ चलाते हैं, अतिथि गृह का रखरखाव करते हैं—और न जाने क्या-क्या, सूची अनन्त है।

मैंने डी.एफ.ओ. को बताया कि गिर के बारे में रामसिंह की जानकारी बेजोड़ है। और वह खुद सिर्फ़ एक औपचारिक डिग्री के दम पर, जो जंगलों से इतने दूर बैठकर हासिल की गई थी, डी.एफ.ओ. बन बैठा है जबकि रामसिंह, जिसने अपनी ज़िन्दगी जंगल में रहकर उसके बारे में अपार ज्ञान बटोरते हुए बिता दी, आज सिर्फ़ एक अदना-सा गार्ड है। सिर्फ़ इसलिए कि रामसिंह पढ़ा-लिखा नहीं है, उसे अंग्रेज़ी नहीं आती, उसके पास कोई लुभावनी डिग्री नहीं और वह शहरी अमीर तबके का नहीं है। बावजूद इसके कि उन अफ़सरों में से किसी भी एक से कहीं ज़्यादा रामसिंह गिर को जानता, समझता और महसूस करता है। मैंने डी.एफ.ओ. से कहा कि इन दो श्रेणियों में से मैं रामसिंह जैसों की ही इज़्ज़त करती हूँ - सिर्फ़ इसलिए नहीं कि वह जानकार है पर इसलिए भी कि उस तक पहुँचना कितना आसान है। दुनिया में अगर तर्क और न्याय होता तो वन विभाग के सबसे ऊँचे ओहदों पर उन अफ़सरों की जगह रामसिंह जैसे गार्ड होते।

मैं बिल्कुल फट पड़ी थी, और फिर ढेर सारे आवेगों में डूबती-उतरती मैं लौट आई। इन भावनाओं में दुख था कि मालधारियों के इस विशाल और बेजोड़ ज्ञान के भण्डार की कोई पूछ ही नहीं थी। जबकि औपचारिक शिक्षा को - चाहे वह कितनी ही घटिया, अयोग्य, और अधूरी क्यों न हो - सारी पहचान मिली हुई है। रामसिंह जैसे लोगों के लिए मन में डर था जिनसे गिर में मवेशी चराने के उनके पारम्परिक हक तो छिन ही गए थे। ऊपर से उन्हें कभी भी उनकी नौकरियों से - आय के एकमात्र बचे साधन से हटाया जा सकता था। गुस्सा भी था कि रामसिंह जैसा निर्भीक व्यक्ति - जिसके लिए जंगली जानवर भी रास्ता छोड़ देते हैं - शहरी अमीरों के आगे कैसे छोटे और दब्बू बनने पर लाचार हो जाते हैं। इस पूरी व्यवस्था के प्रति निराशा भी थी जिसने ज्ञान के हमारे पारम्परिक भण्डारों और संसाधनों पर हमारे पारम्परिक हकों को हमसे छीन लिया है।

उस रात मैं सो नहीं पाई। गिर की मिट्टी और पत्थर गैर क़ानूनी रूप से बाजार तक ले जाने वाले ट्रैक्टरों की आवाज़ असहनीय थी। जबकि गिर के गार्ड - मालधारी - असहाय देखते रहे - उनके गिर को बर्बाद होते हुए।

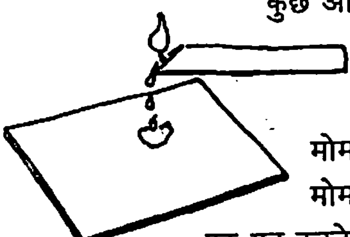
☐ अंग्रेज़ी से अनुवाद : टुलटुल विश्वास

सभी चित्र : शोभा घारे

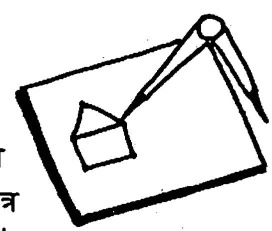
रासायनिक चित्रकारी

यूँ तो चोट लग जाने पर या हाथ कट जाने पर टिंक्चर आयोडीन का इस्तेमाल तुमने ख़ूब किया होगा। यदि किया न हो तो भी चोट की मरहम-पट्टी में इसका उपयोग होता है, यह तो मालूम ही होगा, है न। आज हम लोग उसी टिंक्चर आयोडीन से कुछ मज़ेदार चित्रकारी करने वाले हैं। तुम भी करोगे न।

इसके लिए तुम्हें टिंक्चर आयोडीन के घोल के अलावा मोमबत्ती, माचिस, एक नुकीली मोटी सुई, कील या डिवाइडर और कुछ आलतू-फालतू लोहे के टुकड़े (मसलन पुराना ख़राब ताला, दरवाज़े-खिड़कियों के ख़राब कब्ज़े या ऐसा ही कुछ और) और रेगमाल काग़ज़ इकट्ठा करना होगा।



सामान आ गया हो तो काम शुरू करते हैं। पहले रेगमाल से लोहे की चीज़ की किसी एक सतह को घिसकर बढ़िया चमका लो। इसी सतह पर चित्रकारी करनी है हमें। अब मोमबत्ती जलाकर इस साफ़ सतह पर मोम टपकाओ। जब सारी सतह मोम से ढक जाए तो मोमबत्ती की लौ उस सतह के पास से फेरो। इससे मोम की परत कुछ समतल-सी हो जाएगी। पर यह करते हुए ध्यान रखना कि अपने हाथ-पैर नहीं जला लो।



जब मोम की सतह ठण्डी होकर जम जाए तो डिवाइडर या किसी और नुकीली चीज़ से इस पर मनचाहा चित्र उकेर लो। वैसे शुरू में सरल निशान ही ठीक से बना पाओगे। जैसे अगर तुम्हारा नाम रमेश है तो उसका पहला अक्षर 'र' बना लो। यह ख्याल रखना कि इस तरह से मोम को खुरचते हुए डिवाइडर की नोक लोहे की सतह तक पहुँचनी चाहिए। यानी जहाँ-जहाँ चित्र के निशान हों वहाँ का पूरा मोम निकल जाना चाहिए। अब डिवाइडर की नोक से (या चाहो तो ड्रॉपर ले लो) टिंक्चर आयोडीन के घोल की बूँदे खुरची हुई जगह डालो। कुछ मिनटों में ही आयोडीन के घोल का रंग उड़ जाएगा। तब इसी जगह कुछ और बूँदें टपका दो। दो-तीन बार यही क्रिया दोहराओ और फिर इसको सूखने के लिए छोड़ दो। लगभग घण्टे भर बाद धीरे-धीरे मोम की पूरी सतह को सफ़ाई से उखाड़ दो। तुम्हें नीचे की लोहे की पत्ती पर वही लिखा या बना दिखेगा जो तुमने मोम पर उकेरकर बनाया था।



शुरू में दो-चार बार फालतू लोहे की पत्ती ढूँढकर सरल-सी डिज़ाइन बनाने का अभ्यास करो। फिर जब तुम्हारे हाथ सध जाएँ तो थोड़े बड़े और बारीक चित्र भी बना सकते हो। या अपने दोस्तों को रासायनिक तरीक़े से 'शुभकामनाएँ' लिखकर भी भेज सकते हो। या फिर अपने लोहे के कम्पास या साइकिल के मडगार्ड पर अपना नाम भी लिख सकते हो।

होता कैसे है यह? साधारण सी बात है - यहाँ लोहे और आयोडीन के बीच क्रिया होती है। इससे जो पदार्थ (लवण) बनता है वह स्वभाव से भुरभुरा, पावडरनुमा होता है। इसलिए मोम के उखाड़ने के साथ ही यह पावडर झड़ जाता है। तो जहाँ-जहाँ हम मोम में डिज़ाइन बनाकर आयोडीन की बूँदें टपकाते हैं वहाँ-वहाँ से लोहे का कुछ हिस्सा आयोडीन से क्रिया करके निकल जाता है। इससे बिल्कुल वैसा ही निशान छूटता है लोहे की पत्ती पर, जैसा मोम पर उकेरा था।

यह प्रयोग सिर्फ़ लोहे के साथ ही नहीं, ताँबा या ताँबें से बनी दूसरी मिश्र धातुओं (जैसे पीतल आदि) के साथ भी किया जा सकता है। आयोडीन इन सभी से इसी तरह की क्रिया करता है। ● ●



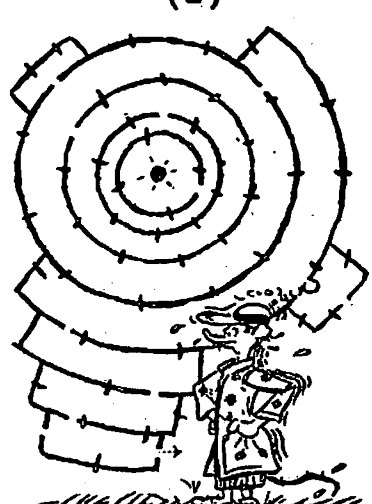
माथापच्ची

(1)

नीचे कुछ मुहावरे लिखे हुए हैं - पर सांकेतिक भाषा में। इस भाषा को पढ़ने का तरीक़ा यह है कि इसमें स्वर (अ,आ,इ, ...) तो वैसे ही रहते हैं पर व्यंजन (क,ख,ग, ...) किसी भी दूसरे व्यंजन से बदल दिए जाते हैं। हाँ यह ज़रूर है कि हर मुहावरे में किसी एक व्यंजन के लिए एक ही बदला हुआ व्यंजन उपयोग किया जाएगा। जैसे इस बार हर 'ल' की जगह 'र' का और हर 'क' की जगह 'ल' का उपयोग किया गया है। मात्राएँ जस की तस रखी गई हैं। बाक़ी अक्षर कैसे बदले गए हैं यह तो तुम्हें खोजना है। तभी तो असली मुहावरे ढूँढ पाओगे -

1. कू मार-मार, पैं चाक-चाक।
2. एल बाग ये कारी तबीं जफकी।
3. लात पें जाक मारता।
4. ह्यक भित एल लहता।
5. एल ये खरे भो।

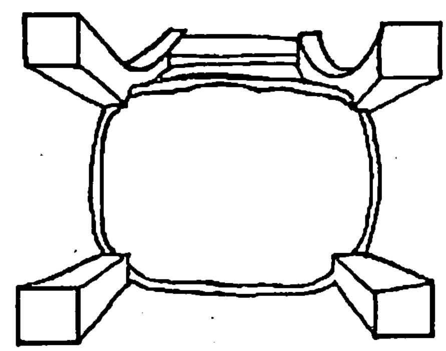
(2)



चूहे मियाँ तो इस पिंजरे से बच-बचाकर बाहर निकल आए हैं। क्या तुम भी उनकी तरह चालाक हो? बीच से बाहर की ओर का रास्ता ढूँढकर जाँच लो।

(3)

यह किस चीज़ का चित्र है? पहचान सकते हो? क्या यह चीज़ आमतौर पर ऐसी ही दिखाई देती है? सोचकर बताओ कि किसे यह चीज़ अक़्सर ऐसी ही दिखाई देती होगी।



(4)

घड़ियों का मामला भी अजीब होता है। मेरी घड़ी हर घण्टे में एक सेकेण्ड आगे हो जाती है जबकि मेरी सहेली की घड़ी हर घण्टे में दो सेकेण्ड पीछे होती जाती है। पर फिर भी कभी-कभी दोनों एक-सा समय दिखाती हैं। जैसे इस वक़्त दोनों घड़ियाँ एक ही समय बता रही हैं।

अच्छा यह बताओ कि दोनों घड़ियाँ अब से कितनी देर बाद फिर एक-सा समय बताएँगी?

(5)

8 2 3 6 = 8
8 5 3 2 = 8
8 2 9 5 = 8
8 2 4 4 = 8

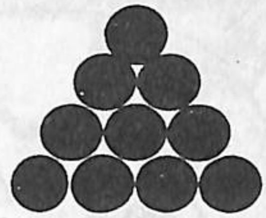
इन समीकरणों में तुम्हें जोड़ (+), घटाना (-), गुणा (X) और भाग (÷) के निशान ऐसे जमाने हैं कि जवाब हर बार 8 ही आए।

(6)

कुछ औरतें बागानों में चाय की पत्तियाँ तोड़ रही थीं। मालिक के दो बागान थे - एक छोटा दूसरा बड़ा। छोटा बागान, बड़े का ठीक आधा था। सारी औरतें आधे दिन तक बड़े बागान में काम करती रहीं। फिर आधी-आधी दोनों बागानों में बँट गईं। शाम तक बड़े बागान का काम पूरा हो गया पर छोटे में इतना काम बचा कि एक औरत एक दिन में उसे पूरा कर सकती थी।

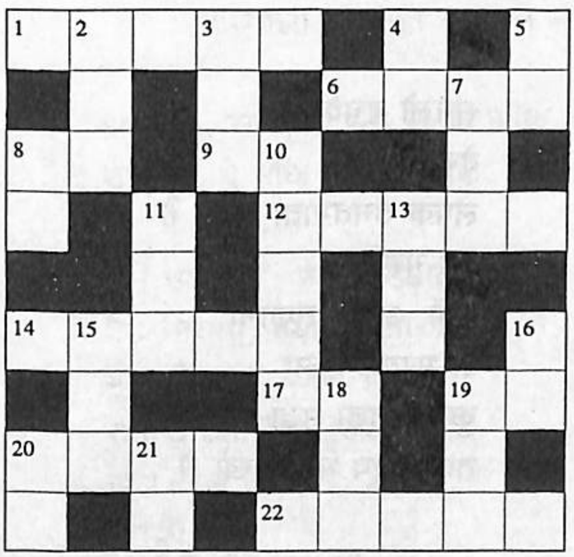
सोचकर बताओ पूरे समूह में कितनी औरतें थीं।

(7)



यहाँ दस कंचे जमे हैं - इस तरह कि ढेर की नोक ऊपर की ओर है। क्या तुम सिर्फ़ तीन कंचों को अपनी जगह से हटाकर दूसरी जगह लगाकर ढेर की नोक नीचे की ओर कर सकते हो?

वर्ग पहेली : 58



संकेत : बाएँ से दाएँ

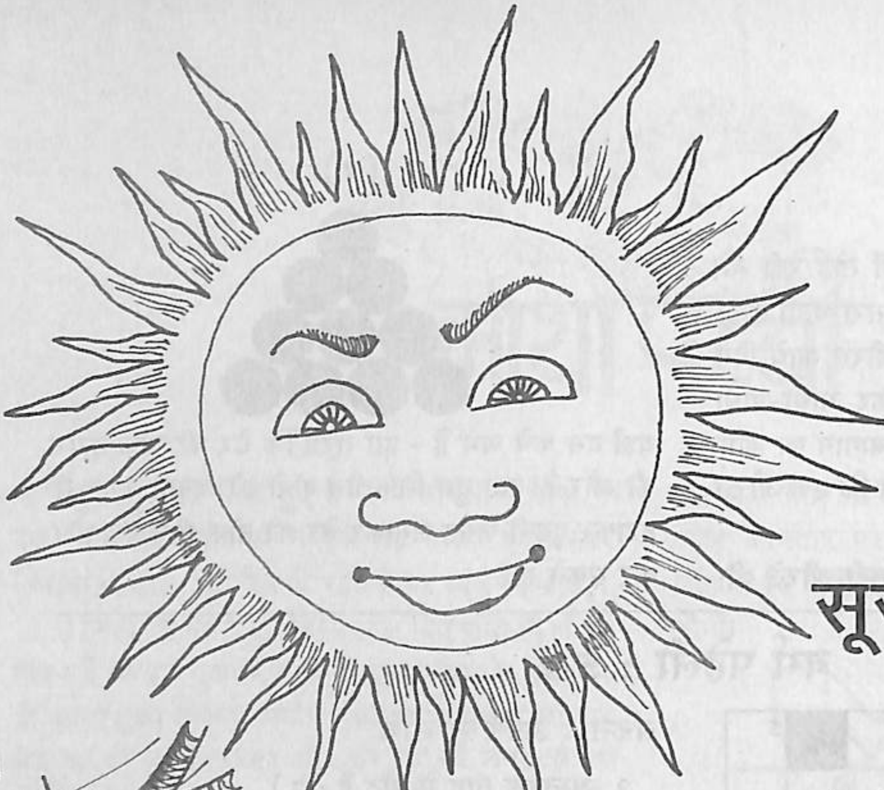
1. रमि के सालन में मेलजोल रखने वाला (5)
6. टब की नाव का आकार क्या है ? (4)
8. परदा (2)
9. पद्य में लिखी रचना (2)
12. नोना मकाम में दिल की इच्छा है (5)
14. भारत क़ी शरण में रह रहे एक तिब्बती बौद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता (3,2)
17. आवाज़ (2)
19. चरण (2)
20. शक्तिशाली महिला (4)
22. मरण की नाक में नाम रखा गया है (5)

संकेत : ऊपर से नीचे

2. अस्तबल ताड़ में डाँट है (3)
3. सरलता (3)
4. पहनावा (2)
5. बरखा टपक रही है चारपाई पर (2)
7. सूजन (3)
8. चमक (2)
10. गर्मी से चेहरे पर मातम तना है (5)
11. दूध पर तैर रही है, निकाल लो (3)
13. मनका कुल कितने हैं, जुल्फ़ों में (3)
15. किसी को धिक्कारना (3)
16. कौआ (2)
18. द्वादश महीने में दसवाँ (3)
19. एक निश्चित समय का अन्तराल (3)
20. कुर्बानी (2)
21. जो टेढ़ा हो (2)

● निमिष अग्रवाल, बतौली, सरगुजा, म.प्र. द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें, बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-58 का हल जुलाई, 1996 के अंक में देखें।



सूरज का मामा



संभलो बचके
देखो भैया!
लपक तमतमाता आया है
वह गुस्सैला
गर्मी, आँधी, तूफानों
से भरकर थैला
कुरता तुड़ा-मुड़ा-सा मैला
तपती धूप भरे आँखों में

जी भर पानी पीने
भरने लाल-लाल मटके
लेकर सूरज का मामा

जाने कौन दिशा में आ धमका है
नदी-पोखरों पर यों आ बमका है



मंद हवा की छीन तरावट
पानी..पानी..मची दुहाई
देखो इसकी लापरवाही
बेचैनी से छुटा पसीना
हारे पंखा भैया
बकरी, भेड़, रंभाती गैया
सूखे पनघट ताल तलैया
तड़प रही गौरैया

मैना हाँफे
दूर क्षितिज पर धरती काँपे
हरियाली तो कहीं रसातल नापे

सनन् ... सनन् .. सन् लू के झौंके
उफ़् .... बे मौके .. कोई रोके

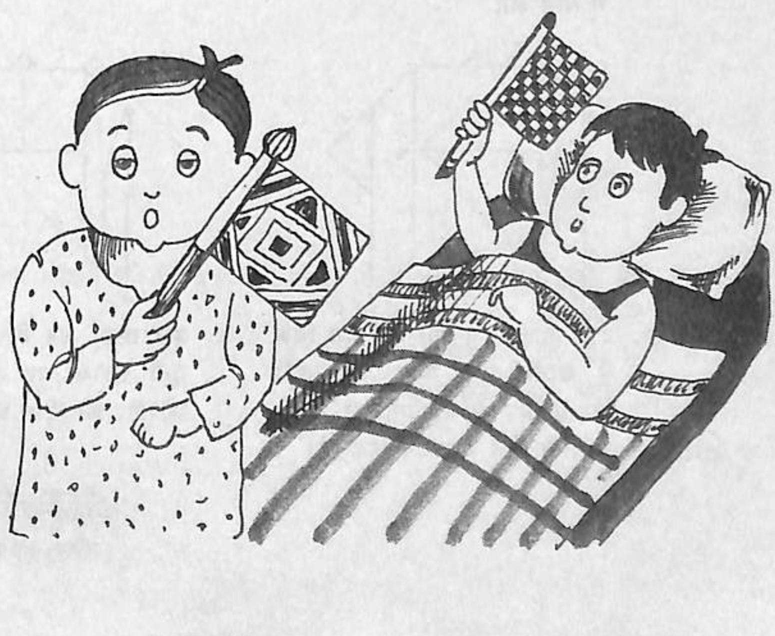
धूल उड़ाता .. ज्वाल उठाता
पेड़ गिराता, नमी चुराता
भूख मिटाता, प्यास बढ़ाता
रात छाँटता, नींद बाँटता
खुल खुल खाँसे
सनकी बूढ़ा
करकट कूड़ा
आया आया बड़ा निगोड़ा
यह सूरज का मामा





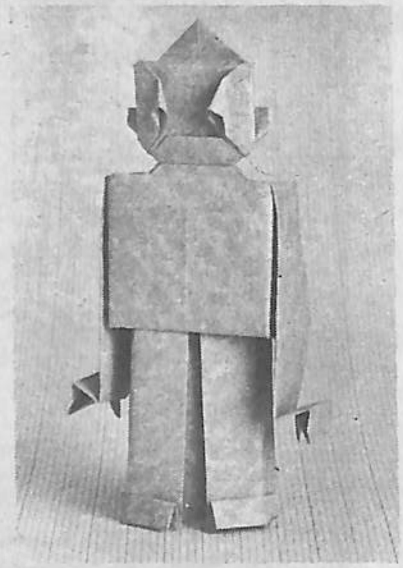
❑ गिरिजा कुलश्रेष्ठ
चित्र : हिमांशु जोशी



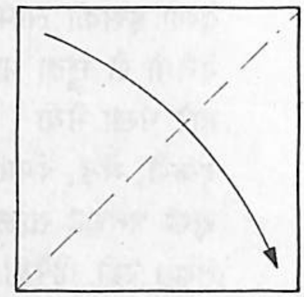


खेल कागज़ का

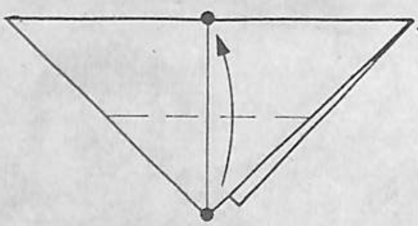
रोबोट



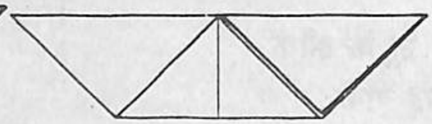
रोबोट बनाने के लिए तुम्हें थोड़ी ज़्यादा मेहनत करनी होगी। आख़िर रोबोट बनाना है कोई सरल बात नहीं। तो चलो तैयार हो जाओ इसके लिए। दो एक बराबर के वर्गाकार काग़ज़ ले लो एक धड़ के लिए दूसरा पैर के लिए। तीसरा वर्गाकार काग़ज़ पहले दो से आधा होगा, सिर के लिए।



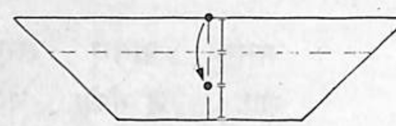
1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। उसे चित्र में दिखाई टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



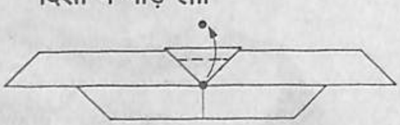
2. इस तरह। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



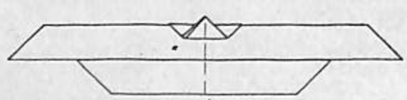
3. इस तरह। अब आकृति पलट लो।



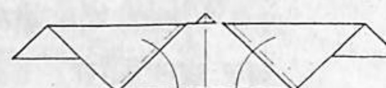
4. इस चित्र में दिखाई टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। मोड़ बनाते हुए ध्यान रखना कि इसका मोड़ एक तिहाई हिस्सा हो।



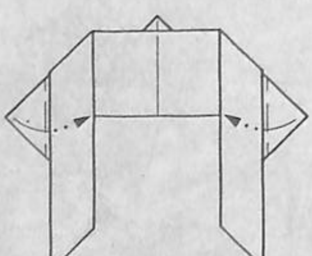
5. ऐसी आकृति बनेगी। इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से ऊपर के छोटे तिकोन को तीर की दिशा में मोड़ लो।



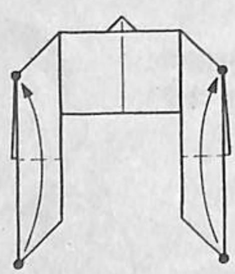
6. इस तरह। अब इस आकृति को पलट लो।



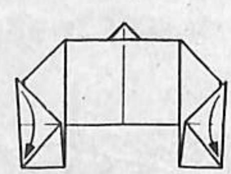
7. ऐसी आकृति है तुम्हारे पास? अब इस चित्र में दिखाई दे रहीं टूटी रेखाओं पर से दोनों सिरों को तीर की दिशा में मोड़ लो। आगे का चित्र थोड़ा बड़ा करके दिखाया गया है।



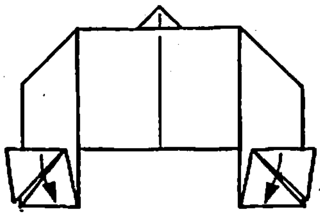
8. ऐसी आकृति बनेगी। अब इस चित्र में दोनों ओर दिख रही टूटी रेखाओं पर से तिकोनों को ऊपरी परत के नीचे घुसाकर मोड़ लो।



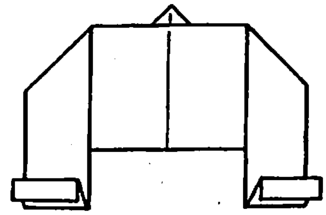
9. इस तरह। अब चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से दोनों हिस्सों को तीर की दिशा में मोड़ लो।



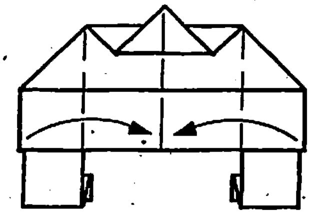
10. ऐसी आकृति बनेगी। अब फिर चित्र के अनुसार टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाते हुए तिकोनों को मोड़ लो।



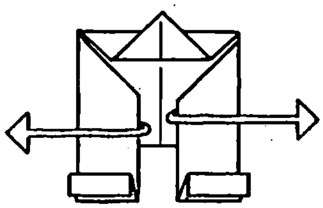
11. यहाँ से चित्र थोड़े बड़े करके दिखाए हैं। इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से दोनों हिस्सों को तीर की दिशाओं में मोड़ लो।



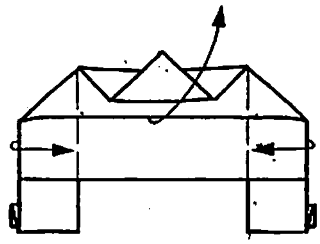
12. ऐसी आकृति बन गई होगी। यह रोबोट के हाथ तैयार हो गए। आकृति को पलट लो।



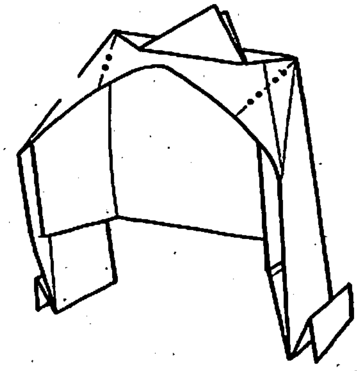
13. पलटने पर ऐसी आकृति दिखेगी। इसे टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में मोड़ लो।



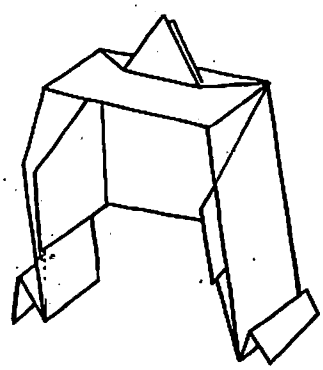
14. इस तरह। मोड़ पक्के करके वापस खोल लो।



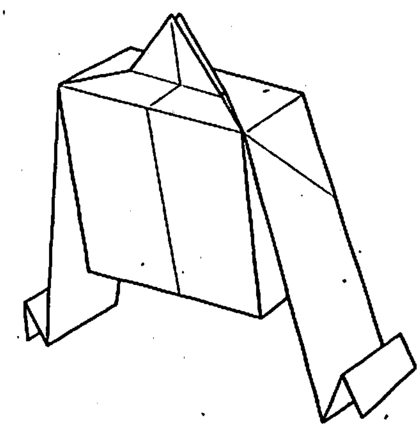
15. इस मोड़ को खोलने के साथ ही ऊपरी हिस्से को भी खोलो। इससे चित्र - 13 में मोड़े हुए दोनों सिरे बीच में रुक जाएँगे।



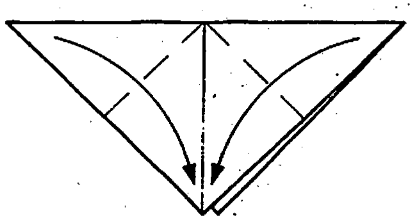
16. देखो इस तरह तीन आयामी धड़ की आकृति बन जाएगी। आकृति में बिन्दु-रेखा दिख रही है वहाँ से मोड़ बना लो जिससे दोनों हाथ रुके रहें।



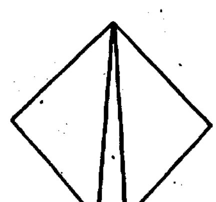
17. देखो ऐसी आकृति बनेगी। अगर तुम्हारी ऐसी आकृति न बनी हो तो फिर से शुरू से कोशिश कर देखो।



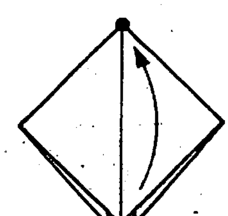
18. उस आकृति को पलटकर देखो। ठीक है? यह धड़ तैयार है।



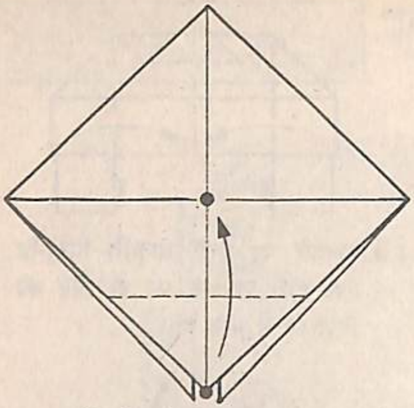
19. अब पैर बनाने के लिए दूसरा वर्गाकार काग़ज़ ले लो। इसे भी धड़ के चित्र-1 की तरह से मोड़ लो। फिर इस चित्र के अनुसार टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



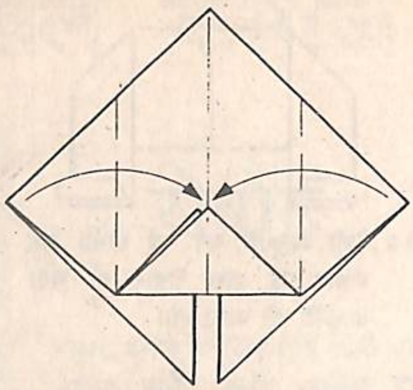
20. इस तरह। आकृति को पलट लो।



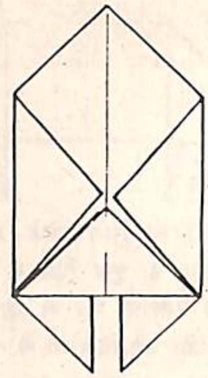
21. इस चित्र में दिख रही बीच की टूटी रेखा पर से आकृति की ऊपरी सतह को तीर की दिशा में मोड़कर मोड़ पक्का करके वापस खोल लो।



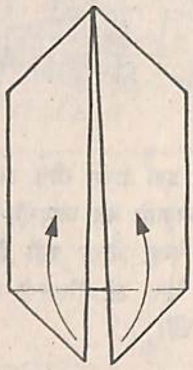
22. यहाँ से चित्रों को बड़ा करके दिखाया है। टूटी रेखा पर से ऊपरी दो सतहों को तीर की दिशा में मोड़ लो।



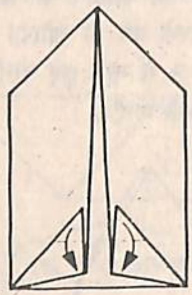
23. इस तरह। इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में मोड़ बनाओ।



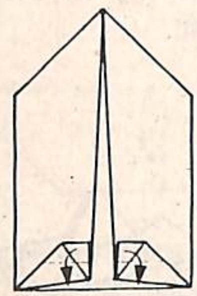
24. ऐसी आकृति बनेगी। इसे पलट लो।



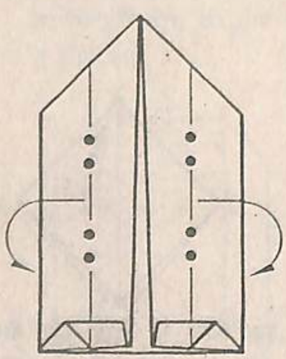
25. इस तरह की आकृति है तुम्हारे पास। इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो।



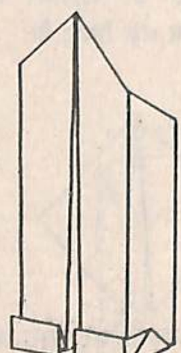
26. टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में मोड़ बना लो।



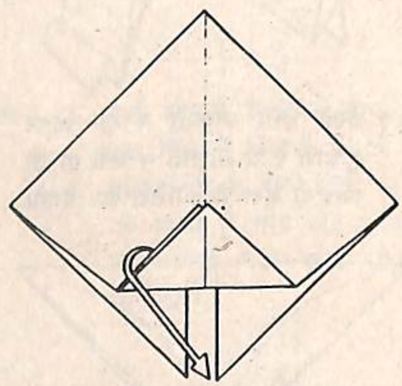
27. इस तरह। एक बार फिर टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।



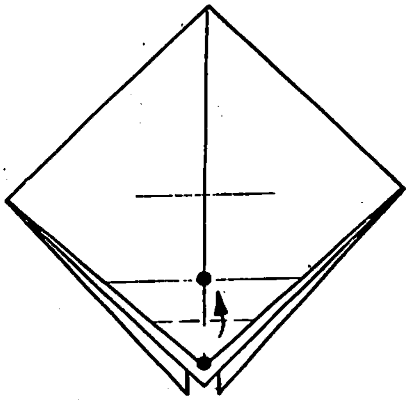
28. इस चित्र में दिख रही बिन्दु-रेखा वाली रेखाओं पर से आकृति को इस तरह मोड़ना है कि बाहरी किनारे पीछे की ओर चले जाएँ।



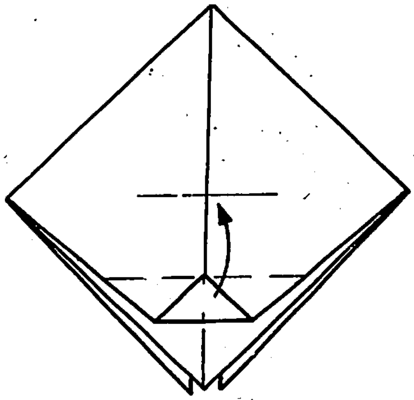
29. यह तैयार हो गए रोबोट के पैर।



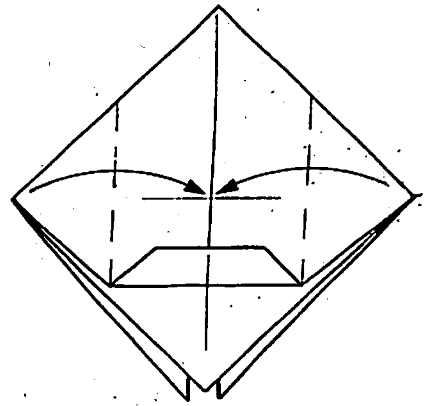
30. अब तीसरा छोटा वाला वर्गाकार कागज़ लो। यह रोबोट का सिर बनाने के लिए है। इससे पहले तो चित्र- 19, 20, 21, 22 23 तक की क्रियाएँ दोहरा लो। जैसी इस चित्र में आकृति दिख रही है बना लो। फिर इस मोड़ को वापस खोल लो।



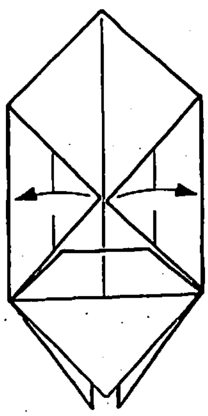
31.इस तरह। अब चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से ऊपरी एक परत को तीर की दिशा में मोड़ लो।



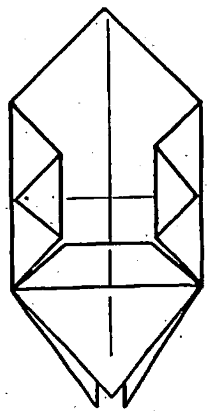
32.एक बार फिर चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



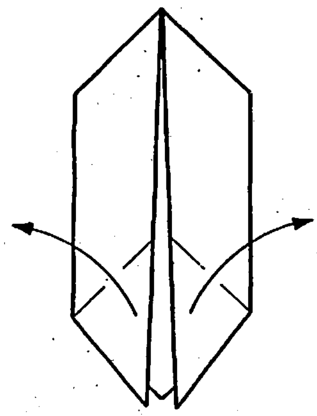
33.अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो।



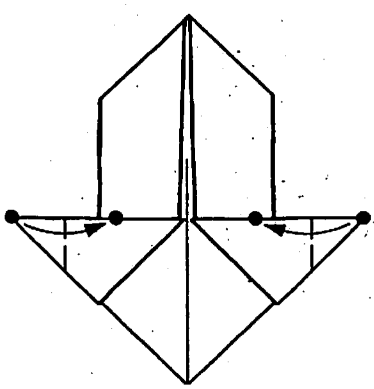
34.ऐसी आकृति बनेगी। चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में ऊपरी सतहों को मोड़ो।



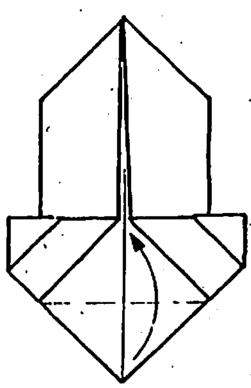
35.इस तरह की आकृति बनेगी। आकृति को पलट लो।



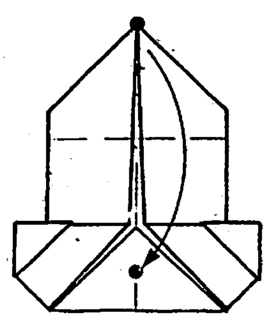
36.इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में ऊपरी सतहों को मोड़ लो।



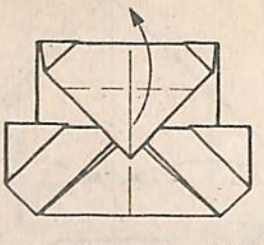
37.इस तरह। अब दोनों ओर की टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो।



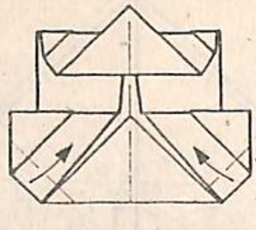
38.फिर टूटी रेखा पर से नीचे के सिरे को तीर की दिशा में मोड़ लो।



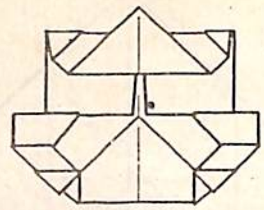
39.अब ऊपर के सिरे को टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़कर नीचे तक लाओ।



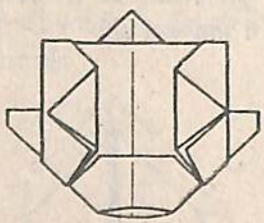
40. इस तरह की आकृति बनेगी। इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से ऊपरी सतह को तीर की दिशा में मोड़ लो।



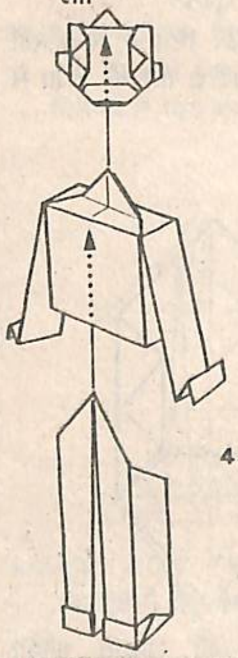
41. इस तरह। अब इस आकृति के आजू-बाजू के किनारों को टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

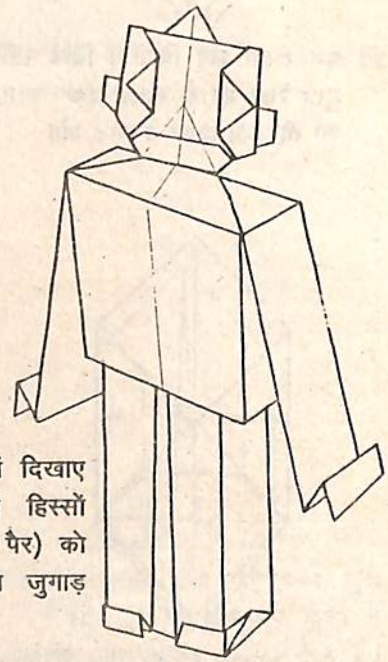


42. इस तरह की आकृति बन गई न। इसे पलट लो।



43. यह तैयार हो गया रोबोट का सिर।





44. अब इस चित्र में दिखाए तरीक़े से तीनों हिस्सों (सिर, धड़ और पैर) को जोड़ लो। थोड़ी जुगाड़ तुम ख़ुद लगाओ।

माथापच्ची - हल : मार्च, 96 अंक के

1. सामान के झुण्ड में बग़ैर जोड़ीदार चीज़ है मंजन करने का ब्रश।
2. यह शृंखला अंकों में आने वाले अक्षरों की संख्या से बनी है। इस हिसाब से नौ लकीर के नीचे होगा और दस ऊपर।
3. दूसरे ख़रीददार ने रामदास की ओर पाँच रुपए दो के दो नोट और एक का एक नोट के रूप में बढ़ाए होंगे। इससे रामदास समझ गया कि उसे नीला साबुन चाहिए क्योंकि पीला चाहिए होने पर वह सिर्फ़ दो रुपए के दो नोट देता।
5. सही समय बारह बजकर पाँच मिनट है। अगर सब घड़ियों में चाभी भरकर समय मिलाया जाए तो सारी की सारी बारह बजे के आसपास समय बताएँगी।
6. बिल्ली का वज़न ढाई किलो है।

वर्ग पहेली 55 का हल

1 सू	2 र	दा	3 स		4 घ	5 रा	ना	
	ख		6 दा	7 ल		ज		8 अ
9 रि	वा	10 ज		य		11 का	छ	ना
	12 ला	र			13 ह	ज		मि
14 गु			15 धी		य			का
ज		16 प	शु			17 रा	18 य	
19 रा	ह	त		20 मा		21 ह	म	ला
त		वा		22 वा	23 त		लो	
	24 ती	र	गी		25 ह	ड़	क	म्प

वर्ग पहेली - 55 का पूरा सही हल भेजने वाले हैं अभिलाषा दीक्षित, लौंड़ी, छतरपुर और गोविन्द सेन, मनावर, धार, (दोनों म.प्र.)। इन्हें तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी।

भूल सुधार : वर्ग पहेली - 55 के साथ ग़लती से यह छप गया था कि इसका हल मई, 96 अंक में छपेगा। जबकि समय के अंतराल के मुताबिक यह हल अप्रैल, 96 में छपना था। इस हिसाब से अब वर्ग पहेली - 56 का हल मई, 96 में और वर्ग पहेली - 57 का हल जून, 96 में छपेगा।



स्वप्निल जादोन, छठवीं, देवगढ़, देवास, म. प्र.



रामलाल, छठवीं, नामली, उज्जैन, म. प्र.

 पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/96



मितेश पुरेड़ा, नवमी, भावनगर, गुजरात

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना